https://swatantrajansamachar.com

स्वतंत्र जनसमाचार

वर्ष : 21 I अंक : 9 I मूल्य 20/-
01 जनवरी से 15 जनवरी 2025

सबके साथ, सच के साथ

महाकुंभ का अर्थशास्त्र

छवि बनाने में जुटा तंत्र

महाकुम्भ प्रयागराज 2025
भक्ति वेदान्त नगर काशी (खालसा)
भक्तिरस की अद्भुत वर्षा
श्री रामकथा
12 जनवरी से 12 फरवरी 2025
कथा समय :
दोपहर 3:00 बजे से सांय 7:00 बजे तक
महन्त श्री हरिहरदास जी महाराज
श्री राम कथा
योगा शिविर
संत सेवा
विद्वत् सम्मेलन
चिकित्सा शिविर
रासलीला-रामलीला
दैनिक भण्डारा
दैनिक यज्ञ
परमपूज्य जगद्गुरू स्वामी वेदान्ती जी महाराज
स्थान : भक्ति बेदान्त नगर काशी संगम लोवर मार्ग, त्रिवेणी चौराहा, सेक्टर - 20, प्रयागराज
सम्पर्क सूत्र: +91-9839266546, 7300800634, 8218449984, 7500018662, 9953223300

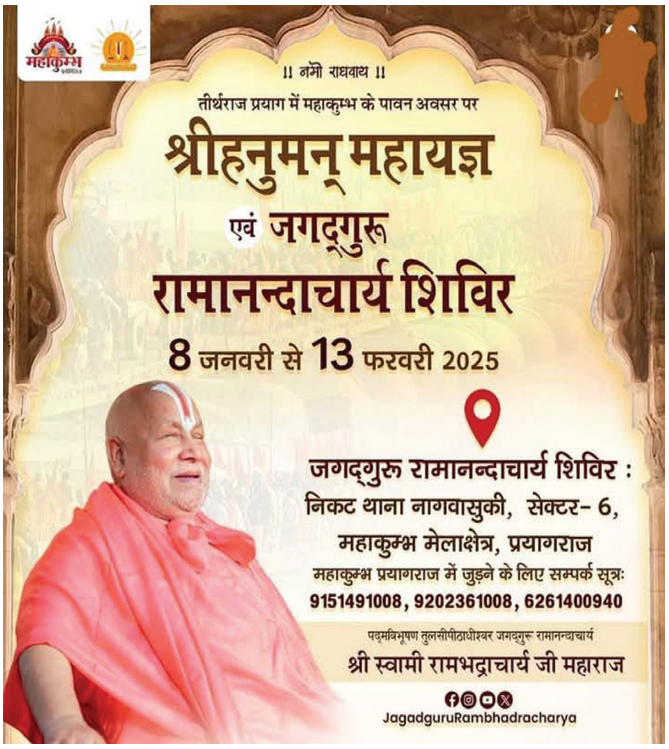

!! नमो राघवाय !!
तीर्थराज प्रयाग में महाकुम्भ के पावन अवसर पर
श्रीहनुमन् महायज्ञ
एवं जगद्गुरू
रामानन्दाचार्य शिविर
8 जनवरी से 13 फरवरी 2025
जगद्गुरू रामानन्दाचार्य शिविर :
निकट थाना नागवासुकी, सेक्टर- 6,
महाकुम्भ मेलाक्षेत्र, प्रयागराज
महाकुम्भ प्रयागराज में जुड़ने के लिए सम्पर्क सूत्रः
9151491008, 9202361008, 6261400940
पद्मविभूषण तुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य
श्री स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज
JagadguruRambhadracharya

12 वर्षों की प्रतीक्षा के बाद,
प्रयागराज एक बार फिर दिव्य और भव्य महाकुंभ
के आलौकिक अनुभव का साक्षी बनने जा रहा है।
महाकुंभ
श्रीमद् भागवत कथा
20 से 26 जनवरी 2025
श्री राम कथा
28 जनवरी से 5 फरवरी 2025
11 लाख पार्थिव शिवलिंग निर्माण
एवं
श्री शिव महापुराण कथा
6 से 14 फरवरी 2025
शांति सेवा शिविर
परम पूज्य शांतिदूत धर्मरत्न
श्री देवकीनंदन ठाकुर जी महाराज
इस आयोजन में यजमान बनने एवं कल्पवास करने के संबंध में अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
7351112221, 7351113331
www.vssct.com

प्रयागराज महाकुम्भ समागम के पावन अवसर पर
परम पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी जी के पावन सान्निध्य में
अमृत भक्ति सत्संग
21 से 23 जनवरी एवं 4 से 7 फरवरी, 2025
ध्यान, यज्ञ, अनुष्ठान, सत्संग एवं गंगा महाआरती
निःशुल्क* आवास एवं भोजन व्यवस्था उपलब्ध है
स्थानः
प्लॉट नं. - 46 सैक्टर-6, नाग वासुकी मार्ग,
प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
आयोजक : विश्व जागृति मिशन - नई दिल्ली
सम्पर्क सूत्र : 8630992931, 9312284390, 9411487658
आप सभी सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

स्वतंत्र जनसमाचार

❖ संपादक ❖
दयाकृष्ण जोशी

❖ कार्यकारी संपादक ❖
राकेश खंकरियाल 'निर्मोही'

❖ संपादकीय मंडल ❖
ॲड. शीतला प्रसाद पांडेय
राकेश शर्मा
जगमोहन रौतेला
हेमंत मैथिल
राजेंद्रनाथ गोस्वामी
सुधीर जोशी
जॉन मेढे
संजय बलोदी प्रखर

❖ साहित्य संपादक ❖
अमर त्रिपाठी

❖ कला और सज्जा ❖
मनोज नायक

❖ आर्ट डायरेक्टर ❖
मोहम्मद जमशेद

❖ पंजीकृत कार्यालय ❖
उत्कर्ष क्रिएटिव सर्विसेस
19/28, प्रभात कालोनी,
आनंद नगर, सांताक्रूज (पू),
मुंबई-400055.

❖ संपादकीय कार्यालय ❖
उत्कर्ष क्रिएटिव सर्विसेस
बेसमेंट नं. 3,कामदार शॉपिंग सेंटर,
कामदार को-ऑप, सोसायटी,
तेजपाल रोड विलेपार्ले (पूर्व),
मुंबई-400057
मो. 9869477697
मो. 9167014505

01 जनवरी से 15 जनवरी 2025

समाज के लिए कलंक बनती... पेज 04
मंईया सम्मान योजना मां बहिनों ... पेज 05
छवि बनाने में जुटा तंत्र पेज 06-07
महाकुंभ का अर्थशास्त्र पेज 08-09
कांग्रेस अपना ही इतिहास भूल ... पेज 10
उत्तराखंड में इसी महीने लागू... पेज 11
कुंभ और सरस्वती पेज 12 -13
दिल्ली किसकी! पेज 14
कर्मयोग के दर्शन का केंद्र .... पेज16-17
हंसना ज़रूरी है पेज 19
अथ कुंभ कथा पेज 20-23
सभी को किफायती और पर्यावरण ... पेज 24-25
लोकमानस में साधु-सन्त पेज 27

उत्कर्ष क्रिएटिव सर्विसेज के लिए मुद्रक प्रकाशक-दयाकृष्ण जोशी ने एम/ एस उत्कर्ष प्रिंटर्स, 19/28, प्रभात कालोनी, आनंदनगर, सांताक्रुज (पूर्व), मुंबई-400055 से छपाकर प्रकाशित किया। (इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखक/ पत्रकारों के अपने हैं, उनका संपादक/ माल के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है।) (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुंबई होगा)
E-mail: rakeshkhankriyalnirmohi@gmail.com Mo.9167014505
सर्वाधिकार कार्यकारी संपादक के अधीन RNI NO.: MAHHIN/2003/10876

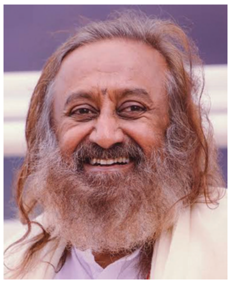

श्री श्री रवि शंकर
(आर्ट आफ लिविंग के
प्रणेता, आध्यात्मिक गुरु

अतिथि संपादकीय

विश्व शांति का एक निदर्शन है कुंभ मेला

बचपन से हम सुनते आए हैं कि दुनिया दो दिन का मेला है। वेदांत के इस उत्कृष्ट ज्ञान के जागरण से जीवन में पूर्णता उदित होती है। पूर्णता का प्रतीक है कुंभ। ब्रह्म ज्ञानी संतों और सिद्धों को कुंभ कहकर भी संबोधित करते हैं। कुंभ एक ऐसा विचित्र मेला है, जहां वे संत मिलते हैं, जिन्हें कुछ भी नहीं चाहिए और वे सांसारिक लोग भी मिलते हैं, जिन्हें बहुत कुछ चाहिए। इस महासंगम में तपस्वी, जिन्हें तपस्या के बल के अहंकार में नहीं उलझना, निर्मम हो अपने अर्जित पुण्य सब पर बिखेर देते हैं। अपनी इंद्रियों से हम जिस अस्तित्व को जानते हैं, महसूस करते हैं, देखते हैं या स्पर्श करते हैं, वह बड़ा ही सीमित है। इसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ है, जो हमारे स्वरूप का अभिन्न हिस्सा है। जैसे-जैसे व्यक्ति प्रौढ़ होने लगता है, वह अदृश्य की खोज में खिंचा चला जाता है। उसे संसार फीका लगने लगता है और पूर्णता प्राप्त गुरुओं की शरण में जाने के लिए वह उतावला हो जाता है। प्रायः जो पूर्ण है, वह भीड़भाड़ से दूर एकांत में रहते हैं। कुंभ मेले मे सब संतों और गुरुजनों का सान्निध्य और सामीप्य एक ही स्थान में सरलता से प्राप्त हो जाता है। ज्ञान, ध्यान और उपदेश का समावेश सहज ही मिल जाता है। यह एक सुअवसर है सूक्ष्म और स्थूल जगत के सबंध को अनुभव करने का। सिद्धों और साधकों की पावन, कल्याणमयी, रोमांचक ऊर्जा में अनुग्रहीत होने का। एकांत में रहने वाले महात्माओं के लिए भी अपनी तपस्या का फल सबके साथ बांटने का अवसर है। संभवतः एकांत और मेले का विरोधात्मक भेदभाव मिटाने के लिए पूर्वजों ने यह प्रथा बनाई। घटपट वेदांत की दृष्टि से जीव घट है, आत्मा आकाश रूपी है और मानव समुदाय घटों का एक समावेश।कुंभ मेले में कल्पवास का बड़ा महत्व है। केवल एक दिन प्रयागराज में आकर डुबकी लगाकर वापस चले जाना पर्याप्त नहीं है। कुछ दिन वहां पर वास करते हुए आत्मचिंतन करो, ज्ञान मंथन करो और फिर सत्य संकल्पी होकर समाज में लौटो तो कुंभ की यात्रा सफल हुई जानो।

अशुद्धि क्षय के लिए तप, ज्ञान प्राप्ति के लिए स्वाध्याय, कर्म शुद्धि के लिए यज्ञ, दान आदि कर्म और कीर्तन में तल्लीन हो स्वयं को भूल जाना, यही सब तीर्थ यात्रा को सार्थक बनाते हैं। योग यज्ञ, ज्ञान यज्ञ, जप यज्ञ, और भक्ति यज्ञ का अनुपम समागम है कुंभ मेला।अपने द्वारा हुए पाप की ग्लानि को आत्मा पर नहीं लादें। भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भागवत गीता में कहा है, "तुम अपने पापों को स्वयं दूर नहीं कर सकते, मेरी शरण में आओ, मैं तुम्हारे सारे पाप दूर कर दूंगा।" यही संतों की वाणी है। संतों के संग बैठने और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाने से भीतर के मल, आवरण और विक्षेप दूर हो जाते हैं। जीवन आनंद से पुलकित हो उठता है। महाकुंभ 2025 में तीर्थयात्रियों की सुविधा हेतु सरकार और प्रशासन ने उत्कृष्ट और अत्याधुनिक व्यवस्था का प्रबंध कर एक नया मानदंड स्थापित किया है। पर्यावरण संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध लगाया गया है और साफ-सफाई के विशेष इंतजाम किए गए हैं। स्वच्छ जल की निर्बाध आपूर्ति, पर्यावरण-अनुकूल आवास की व्यवस्था और व्यापक सुरक्षा योजनाओं के यह समग्र प्रयास सराहनीय है।जनमानस के ह्रदय पटल पर कुंभ मेला एक सकारात्मक प्रभाव करता हुआ आया है। यह जीवन के अत्युत्कर्ष सत्य की खोज, पुण्य के उपार्जन और परस्पर सहयोग पूर्ण जीवन का एक आदर्श प्रस्तुत करता है। ब्रह्मांडीय शक्तियां इन दिनों एक लयबद्ध रूप में होती हैं, ऐसी मान्यता है। आत्मा अमर है और भक्ति अमृत स्वरूपा है। ब्रह्मांड के अस्तित्व में अपनी पहचान को विलीन कर देना और पूर्णता को प्राप्त करने की यह प्रथा है। यह अद्भुत है कि मेले में करोड़ों लोगों के एकत्रित होने पर भी एक-दूसरे के प्रति करुणा, सेवा और परहित का मनोभाव, शुद्ध आचरण और व्यवहार झलकता है। काश संपूर्ण विश्व नित्य ऐसे ही कुंभ महोत्सव की भावना को बनाए रखे, तो न कोई चोरी होगी, न हिंसा, न द्वेष या युद्ध, और विश्व में शांति की संभावना और भी सदृढ़ हो जाएगी। उस विश्व शांति का, वैविध्यता में एकता और परस्पर सहयोग का एक निदर्शन है कुंभ मेला!

प्रयागराज में यह भी देखें

कामधेनु स्वीट्स

* **रेटः** 300 रु किलो से शुरू
* **लोकेशनः** सिविल लाइन्स
* **खासियतः** ये प्रयागराज की सबसे प्रसिद्ध मिठाई की दुकानों में से एक है। यह दुकान अपनी क्वालिटी और स्वाद के लिए प्रयागराज के लोगों की पहली पसंद है।

मंईया सम्मान योजना मां बहिनों के क़र्ज़ उतारने की छोटी सी पहल

महिलाओं को सशक्त बनाने बड़ा कदम है जहां की 18-50 वर्ष आयु की सभी 56 लाख महिलाओं के खातों में मेरे वादे के अनुसार 2500 रुपए को सम्मान राशि पहुंचनी शुरू हो गई है। यह उनकी आर्थिक स्वतंत्रता तथा झारखंड के समय विकास को दिशा में बड़ा कदम है। यह बात वे लोग भली-भांति जानते हैं जो झारखंड की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि A से परिचित हैं। दशकों से. हमारे राज्य ने ग्रामीण परिवारों पर शोषक साहूकारों के विनाशकारी प्रभात्र को देखा है, जिसमें महिलाएं कर्ज से उत्पन्न गरीबी का असहनीय बोझ उठाती रही हैं। मेरे पिता दिशोम गुरु शिबू सोरेन के नेतृत्व में 1970 के दशक में महाजनों के विरोध में आंदोलन चला और इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे कर्ज ने पीढ़ियों को गरीबी के चक्र में फंसा दिया। यह मेरे लिए गौरव की बात है कि 'मंईयां सम्मान योजना' शोषक साहूकारी प्रथाओं के खिलाफ मेरे पिता दिशोम गुरु शिबू सोरेन के ऐतिहासिक संघर्ष की विरासत को जारी रखने में एक बड़ा कदम है। इस योजना तहत मेरे राज्य की माता, बहिनों को वर्ष में 30,000 रुपार, बिना किसी देरी और बिना किसी को खुशामद किए मिलेंगे।

मुझे भरोसा है कि एक परिवार को 18-50 वर्ष की हर बहन को 2,500 रुपए हर महीने मिलने से परिवार की आय में परिवर्तनकारी वृद्धि होगी। योजना का वित्तीय समावेशन का पहलू भी ध्यान देने योग्य है। महिलाओं के बैंक खातों में सीधे हस्तांतरण से हम पहली बार लाखों महिलाओं को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली में ला रहे हैं। इससे उनकी बैंकिंग क्रेडिट हिस्ट्री बनने से उचित दरों पर ऋण की उपलब्धता हो पाएगी। गांवों की अर्थव्यवस्था पुनः चल पड़ी है। सरकार के इस तरह के सार्वभौमिक कार्यक्रम के राजकोषीय निहितार्थों पर सवाल उठाने वाले आलोचकों को इसे केवल व्यय की बजाय, एक निवेश के रूप में जानना, समझना चाहिए।

इस योजना पर खर्च की जा रही राशि हमें कई रूपों, जैसे-आकस्मिक स्वास्थ्य समस्त पर कम खर्च, परिवार में बेहतर शिक्षा एवं बेहतर पोषण को बढ़ावा एवं इसके कारण कम सामाजिक कल्याण खर्च के रूप में वापस मिलेगी। बढ़ी हुई खपत के माध्यम से उत्पन्न आर्थिक गतिविधि कर राजस्व को बढ़ावा देगी। यह वाइब्रेंट स्थानीय अर्थव्यवस्था की नींव को और मजबुती देगी, जिसका खाका मेरी सरकार ने खींच लिया है। योजना का 'मंईयां सम्मान' नाम आर्थिक तौर पर मजबूत नींव प्रदान करते हुए, हमारी झारखंडी विरासत में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता देता है।

'मेईयां सम्मान' सिर्फ एक सरकारी योजना नहीं बल्कि झारखंड के भविष्य के लिए हमारे मूल्यों और दृष्टिकोण का एक आईना है। यह पहल दूसरे राज्यों के लिए भी मिसाल कायम करती है।

हेमंत सोरेन

मुख्यमंत्री, झारखंड

छवि बनाने में जुटा तंत्र

नवीन कुमार (वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक)

महाराष्ट्र में भाजपानीत सरकार बन गई है और राज्य के मुखिया यानी मुख्यमंत्री की कमान देवेंद्र फडणवीस ने संभाल ली है। यह पद फडणवीस के लिए चुनौतीपूर्ण भी है। क्योंकि, सरकार का खजाना खाली है और यह सरकार कर्ज में डूबी हुई है। ऐसे में फडणवीस खजाना को कैसे भर पाएंगे और राज्य बनाना है और उन्होंने इस दिशा में काम करना शुरू कर दिया है। वह विकास के काम को लेकर बेहद सजग हैं और सकारात्मक तरीके से विकास का काम करके खुद को विकास पुरुष भी बनाना चाहते हैं। उन्होंने कहा है कि वह पांच साल में महाराष्ट्र को विकास की उस ऊंचाई पर पहुंचा देंगे जहां पर

कर्ज से कैसे मुक्ति दिला पाएंगे यह उनके सामने बड़ी चुनौती है। लेकिन फडणवीस प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नक्शे कदम पर चलने वाले नेता हैं। इसलिए विकास को लेकर जो उनकी जो सोच है वो मोदी वाली है। मुख्यमंत्री बनने के बाद फडणवीस ने खुद कहा है कि वह मोदी की तरह ही महाराष्ट्र के लिए रूपरेखा तैयार करके काम करेंगे। उनका लक्ष्य महाराष्ट्र को नंबर वन विकसित लोग महाराष्ट्र के विकास की ही बात करेंगे। फडणवीस विदर्भ क्षेत्र से आते हैं। इसलिए उन्होंने विकास की रूपरेखा के तहत सबसे पहले विदर्भ के गढ़चिरौली जिला को चुना जो आदिवासी बहुल जिला है। लेकिन इस जिले की पहचान नक्सली क्षेत्र के रूप में भी है। अब फडणवीस ने इसे नक्सली मुक्त करने का फैसला लिया है। उन्होंने घोषणा की है कि गढ़चिरौली को तीन साल के अंदर

प्रयागराज में यह भी देखें

कॉफी हाउस

* रेटः 70 रुपए कप

* लोकेशनः सिविल लाइंस

* खासियतः ये 1957 से चल रहा है। चाय-कॉफी के शौकीन लोगों के लिए बेस्ट जगह है। इसके अलावा यहां आपको डोसा, सैंडविच जैसी डिशेज भी मिल जाएंगी।

पंडित जी की चाट

* रेटः 40 रुपए प्लेट

* लोकेशनः कर्नलगंज

* खासियतः दुकान 1945 से चल रही है। यहां आलू की टिक्की, फुल्की, दही बड़ा, धनिया मिक्स हरा आलू और गुलाब जामुन मिलते हैं।

नक्सली मुक्त कर दिया जाएगा। इसके लिए उन्होंने नक्सलियों को आत्मसमर्पण करने की मुहिम चलाई है। आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों को सरकारी नौकरी भी दी जा रही है। नक्सलियों को मुख्यधारा से जोड़ा जा रहा है। इसके साथ फडणवीस गढ़चिरौली में उद्योगों का जाल बिछा रहे हैं। लाखों करोड़ के निवेश होने लगे हैं। खनिज संपदाओं से भरपूर इस जिले को स्टील सिटी के रूप में पहचान दिलाने का काम किया जा रहा है। सड़क और हाइवे से इसे जोड़ा जा रहा है ताकि विकास के किसी काम में बाधा न हो। विकास के मामले में काफी पिछड़ा होने से ही फडणवीस गढ़चिरौली के विकास के लिए ही काम नहीं कर रहे हैं बल्कि भाजपा के सरकार स्थापना में विदर्भ का बहुत बड़ा योगदान है। इस विदर्भ ने भाजपा को सबसे ज्यादा विधायक दिया है तो विदर्भ में विकास की गंगा बहानी ही पड़ेगी। फडणवीस के नेतृत्व में सवा महीने पुरानी सरकार हो चुकी है। समय की रफ्तार को जानते हुए ही फडणवीस ने टास्क मास्टर की भी भूमिका निभानी शुरू कर दी है। उनका उद्देश्य है कि राज्य में विकास के काम निर्धारित समय पर हो जाना चाहिए। इसलिए उन्होंने मंत्रियों को 100 दिनों का टास्क दिया है। अब सभी मंत्री अपने विभाग के कामों को 100 दिनों में पूरा करेंगे। अगर इसमें वो सफल नहीं हुए तो यह संभव है कि वर्तमान मंत्री का पत्ता कट सकता है। फडणवीस विकास के काम को लेकर सख्त इसलिए हैं कि वह फिर से सत्ता में वापस आना चाहते हैं और जनता को सरकार के खिलाफ बोलने का मौका नहीं देना चाहते। जाहिर-सी बात है कि विकास के काम नहीं होने पर विपक्ष सरकार की आलोचना करने में कोई कसर नहीं छोड़ेगा और फडणवीस अपने कार्यकाल में विपक्ष को यह मौका नहीं देना चाहते। अपनी राजनीतिक सूझबूझ से फडणवीस महायुति के घटक दल शिंदे सेना और अजित पवार की एनसीपी को भी अपने साथ रखकर एकजुटता दिखाने का काम कर रहे हैं। राज्य के विकास के लिए फडणवीस सकारात्मक रूप से सक्रिय इस वजह से भी हैं कि अगले कुछ महीनों के दौरान बीएमसी सहित कई महापालिकाओं और नगरपालिकाओं से लेकर ग्राम पंचायत तक के चुनावों में विपक्ष को हराना है।

फडणवीस आरएसएस के करीबी हैं इसलिए आरएसएस का चुनावी राजनीति में भी सहयोग लिया जा रहा है। आरएसएस ने विधानसभा चुनाव में भी महायुति की मदद की थी। भाजपा की चुनावी बेचैनी कैबिनेट की बैठक में भी देखने को मिली है। इस बैठक में आगामी चुनावों के अलावा बेमौसम बारिश से किसानों के नुकसान, मराठा आरक्षण और सनसनीखेज बीड सरपंच हत्या जैसे मुद्दों पर भी चर्चा हुई। बीड सरपंच हत्या का मामला ऐसा मामला है जिससे फडणवीस की छवि धूमिल हो सकती है। क्योंकि, गृह विभाग फडणवीस के ही पास है। इसलिए फडणवीस सरपंच के परिवार को न्याय दिलाने की कवायद कर रहे हैं। जिस सरपंच की हत्या हुई है वो भाजपा बूथ प्रमुख भी था। अगर सरपंच के परिवार को न्याय नहीं मिल पाता है तो भाजपा के कार्यकर्ताओं पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। इससे भाजपा को चुनावी राजनीति में नुकसान हो सकता है और यह नुकसान मुख्यमंत्री के रूप में फडणवीस कभी नहीं चाहेंगे। मुख्यमंत्री के रूप में सत्ता संभालने का अनुभव फडणवीस को है। वह पांच साल तक मुख्यमंत्री रह चुके हैं। एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली ढाई साल की सरकार में उपमुख्यमंत्री रहते हुए फडणवीस सत्ता पर काबिज रहे हैं। उपमुख्यमंत्री से मुख्यमंत्री बनने वाले फडणवीस राज्य में विकास की गाड़ी दौड़ाने में लगे हैं। फडणवीस ने कानून व्यवस्था के तहत सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित किया है। साइबर क्राइम और अन्य क्राइम पर रोक लगाने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद ली जा रही है। जिलाधिकारी, एसपी और मनपा प्रशासन को निर्देश दिया गया है कि जनता के काम होने चाहिए। मेट्रो के काम की गति को बढाने का भी निर्देश दिया गया है। पर्यावरण को लेकर भी फडणवीस चिंतित हैं और प्रदूषण को खत्म करने के लिए काम किया जा रहा है। 19 परियोजनाओं को गति देने का काम किया जा रहा है। जिस लाडकी बहीण योजना ने भाजपा को सत्ता दिलाने में मदद की अब उस योजना के तहत महिलाओं को 2100 रुपये प्रति माह कैसे देना है इसके लिए बजट में प्रावधान करने की कोशिश हो रही है। फडणवीस बार-बार कह रहे हैं कि यह योजना बंद नहीं होगी। लेकिन इस योजना से सरकारी खजाने पर आर्थिक बोझ भी बढ़ता जा रहा है। दूसरी योजनाएं प्रभावित हो रही हैं। राज्य के कई उद्योग जो गुजरात चले गए हैं उसे महाराष्ट्र में वापस लाने की कवायद हो रही है। फडणवीस वर्ल्ड इकॉनोमिक फोरम की बैठक में हिस्सा लेकर दावोस से निवेशकों को लाने वाले हैं जिससे महाराष्ट्र का आर्थिक संकट कम हो सकता है। ●

महाकुंभ का अर्थशास्त्र

कुंभ से जीडीपी 9 फीसदी से ज्यादा बढ़ जायेगी

4 लाख करोड़ से अधिक का व्यापार होगा कुंभ से

पंकज गांधी जायसवाल
लेखक वरिष्ठ अर्थशास्त्री

अभी अभी सरकार की एक एजेंसी ने जीडीपी का पहला अग्रिम अनुमान जारी किया और उसने अनुमान लगाया कि अबकी बार जीडीपी 6.4 फीसदी रहेगी. हालांकि यह अनुमान रियल जीडीपी के आंकड़े हैं. अर्थव्यवस्था में दो तरह के जीडीपी के आंकड़े होते हैं एक नॉमिनल जीडीपी और दूसरा रियल जीडीपी. नॉमिनल जीडीपी वह होता है जो जीडीपी के आंकड़े को वर्तमान मूल्य के आधार पर बताता है वहीं रियल जीडीपी वह होता है जो इस नॉमिनल जीडीपी में महंगाई के दौर को समायोजित कर मुद्रा के स्तर पर उस इन्फ्लेशन का समायोजन कर के बताता है.

अगर आप वर्तमान मूल्य के आधार पर जीडीपी साइज का ग्रोथ अनुमान देखेंगे तो यह 9.7 फीसदी है जो कि पिछले साल से ज्यादा है. वर्तमान मूल्य के आधार पर वर्ष 23-24 में जीडीपी 295.36 लाख करोड़ थी और वर्ष 2024-25 में 324.11 लाख करोड़ रुपये का अनुमान है. यह 28.75 लाख करोड़ का ग्रोथ करीब करीब 9.7 फीसदी के आसपास आता है. इसी आंकड़े को अगर हम महंगाई दर के समायोजन के बाद देखते हैं तो यही वर्तमान मूल्य के आंकड़े रियल जीडीपी के टर्म में 23-24 के लिए 173.82 लाख करोड़ तथा वर्ष

2024-25 के लिए 184.88 लाख करोड़ आता है जिससे वृद्धि की दर कम दिखती है जो 6.4 के आसपास आती है.

रियल टर्म में वृद्धि दर कम दिखने का एक और कारण है आधार वर्ष २२-२३ में रियल जीडीपी का आधार 160.71 करोड़ था अतः आधार वर्ष के आकड़े कम होने के कारण २३-२४ में इसके उछाल का प्रतिशत ज्यादा है. महंगाई दर के समायोजन के बाद रियल जीडीपी के वैल्यू के हिसाब से देखेंगे तो वर्ष २२-२३ में रियल जीडीपी 160.71 लाख करोड़ २३-२४ में 173.82 लाख करोड़ और वर्ष २४-२५ में अनुमान 184.88 लाख करोड़ रूपये, मतलब हम ग्रोथ के ही ट्रैक पर हैं. वर्तमान मूल्य के आधार पर नॉमिनल जीडीपी की बात करें

तो वर्ष २२-२३ में जीडीपी २६९.५० लाख करोड़ २३-२४ में २९५.३६ लाख करोड़ और वर्ष २४-२५ में अनुमान 324.11 लाख करोड़ रूपये है जो बताता है की वर्तमान मूल्य के आधार पर यह ग्रोथ ट्रैक तो और तेज है.

हालांकि पश्चिमी पैटर्न पर आधारित इस आंकड़े में सनातन अर्थशास्त्र आधारित आंकड़े नहीं शामिल हैं इसलिए इस पर चिंतित होने की जरुरत नहीं है. भारत जैसे प्राचीन देश में जिसका मूल धर्म सनातन है, जिसकी आर्थिक व्यवस्था भी सनातन अर्थव्यवस्था और जिसका आधारउत्सवधर्मी होना है उसे मंदी की मार का स्थायी खतरा हो ही नहीं सकता. भारत की उत्सवधर्मिता हर बार हर साल पारिवारिक, सामाजिक और धार्मिक उत्सवों के माध्यम से अर्थव्यवस्था में जान फूंकती रहती है और भारत में कभी आर्थिक सुस्ती और मंदी आ ही नहीं पाती। सभ्यता के निर्माण से ही भारत की अर्थव्यवस्था मोबाइल मेले और हाट के माध्यम से आगे बढ़ी है जिसमें

हर 4 साल में एक अंतरराष्ट्रीय स्तर का मेला जिसे अंग्रेजीदां लोग एक्सपो भी कह सकते हैं आयोजित होता रहता है, जो अर्थव्यवस्था में अपने इकोनॉमिक्स, वहां उपजे आर्थिक सामाजिक और आध्यात्मिक रसायन से कुछ ना कुछ मौद्रिक गणित निकाल ही लेता है.

एक छोटे से कांफ्रेंस में जाने से कुछ ना कुछ इकोनॉमिक्स लेकर लोग आते हैं, उनकी कुछ केमिस्ट्री जम जाती है, कुछ गणित बैठ जाता है यह तो करोड़ों लोगों के कांफ्रेंस जैसा है तो आर्थिक असर दिखायेगा ही.

इस बार के कुंभ के आंकड़े जो सरकार बता रही है उसके होने भर से ही नॉमिनल और रियल दोनों जीडीपी के आंकड़े प्रतिशत में ही

सही 1 फीसदी से भी ज्यादे बढ़ोत्तरी हो जाएगी। बतौर उत्तर प्रदेश सरकार उसके अनुमान से देश विदेश से करीब 45 करोड़ लोग इस कुंभ में आएंगे। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने तो मंच से बताया की कुंभ से दो लाख करोड़ का व्यापार होगा यदि प्रति व्यक्ति पांच हजार खर्च करता है तो. मैं इसमें थोड़ा और इजाफा करता हूं क्यूंकि देश विदेश से भी लोग आयेंगे, काशी अयोध्या चित्रकूट भी जायेंगे, विदेश के लोग तो देश के कई हिस्से में जायेंगे. यदि उनके घर से कुंभ में आने से लेकर घर वापस आने तक का प्रति व्यक्ति औसत खर्च जोड़ लेंगे तो औसत करीब 10 हजार प्रति व्यक्ति हो सकता है. ऐसे में यदि 45 करोड़ में इस दस हजार प्रति व्यक्ति खर्च का गुणा करेंगे तो यह करीब साढ़े चार लाख करोड़ रूपये होता है. इसे हम दस फीसदी अनुमान रिस्क के नाम पर थोड़ा कम चार लाख करोड़ ही मान लेते हैं तो भी यह अर्थव्यवस्था में जान फूंकने के लिए कमाल का आंकड़ा है.

यहां ध्यान देने योग्य बात है कि यह खर्च अतिरिक्त खर्च होता है जो उनके नियमित खर्च के अतिरिक्त होगा। मतलब यह चार लाख करोड़ अनियोजित खर्च जनवरी से लेकर फ़रवरी के बीच अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त खर्च के रूप में किये जायेंगे। ये खर्चे रियल जीडीपी और नॉमिनल जीडीपी दोनों ही आंकड़े के पैमाने पर 1 फीसदी से ज्यादा बैठेंगे. मतलब कुम्भ का अर्थशास्त्र तिमाही के आंकड़ों को मजबूत करेगा ही करेगा देश के वार्षिक राष्ट्रीय जीडीपी को भी मजबूत करेगा और अर्थव्यवस्था को भी.

सरकार का इस कुम्भ में हुए निवेश से कई गुना रिटर्न आ जायेगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सलाहकार अवनीश अवस्थी के अनुसार

केंद्र और राज्य सरकार इस पर मिलकर करीब सोलह हजार करोड़ खर्च करेंगे. अगर इसी को आधार मान लें तो सरकार की ही आय कई गुना हो जाएगी. मसलन अगर चार लाख करोड़ पर औसत जीएसटी का संग्रह निकालें तो यह करीब 50 हजार करोड़ के आसपास होगा, इस खर्च पर जो लोगों को आय होगा उस पर आयकर तथा अन्य सुविधाओं के अप्रत्यक्ष कर जोड़ दें तो यह आंकड़ा एक लाख करोड़ तक पहुँच जायेगा मतलब कई गुना आय तो सरकार को ही होगा. ये सारे विश्लेषण और आंकड़े बताते हैं की किताबी आंकड़े भले ही कुछ कहे कुंभ के बाद अगली तिमाही में अर्थ अमृत का प्रसाद मिलने वाला है, तिमाही आकड़े के साथ शेयर बाजार नृत्य करेगा ही करेगा। सांस्कृतिक और सामाजिक पुनरुत्थान के साथ आर्थिक पुनरोत्थान की भी नींव डालेगा यह महा कुम्भ.

अ ग र आप वर्तमान मूल्य के आधार पर जीडीपी साइज का ग्रोथ अनुमान देखेंगे तो यह 9.7 फीसदी है जो कि पिछले साल से ज्यादा है. वर्तमान मूल्य के आधार पर वर्ष 23-24 में जीडीपी 295.36 लाख करोड़ थी और वर्ष 2024-25 में 324.11 लाख करोड़ रुपये का अनुमान है. यह 28.75 लाख करोड़ का ग्रोथ करीब करीब 9.7 फीसदी के आसपास आता है. इसी आंकड़े को अगर हम महंगाई दर के समायोजन के बाद देखते हैं तो यही वर्तमान मूल्य के आंकड़े रियल जीडीपी के टर्म में 23-24 के लिए 173.82 लाख करोड़ तथा वर्ष 2024-25 के लिए 184.88 लाख करोड़ आता है जिससे वृद्धि की दर कम दिखती है जो 6.4 के आसपास आती है.

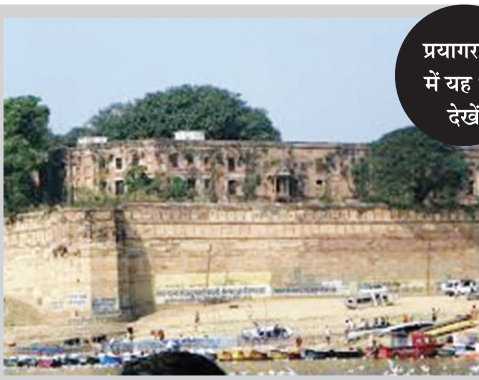

प्रयागराज में यह भी देखें

अकबर का किला

*** लोकेशनः संगम तट, * संगम से दूरीः 3 किमी.**
*** कब जाएं: 10 am- 6 pm**
*** खासियतः किला अकबर ने 1575 में बनवाया था। इसके निर्माण में 45 साल लगे थे। फिलहाल ये सेना की संपत्ति है। अक्षयवट और सरस्वती कूप समेत कई टूरिस्ट आकर्षण किले के अंदर हैं।**

कांग्रेस अपना ही इतिहास भूल गयी है

ध्रुव शुक्ल

कॉंग्रेस आम चुनाव में अक्सर पीछे रह जाती है। अब तो वह पीछे रह जाने के डर से उपचुनाव में भी हिस्सा लेने से कतराने लगी है। पीछे रह जाने के बाद वह अपनी समीक्षा कम करती है, दूसरों पर दोष ज़्यादा लगाती है। उसके नेता कहते ज़रूर हैं कि हम ज़मीनी स्तर पर अपने दल की समीक्षा करेंगे। पर वे अपनी कथनी को करनी में नहीं बदल पाते। कॉंग्रेस को देखकर कहने का मन होता है कि --- वह ख्वाब है किसी और का, उसे देखता कोई और है। अब यह तो देखने वाले की मनोदशा पर निर्भर है कि वह क्या देखता है? ---- इतने बड़े देश में कुछ नेताओं का सुरक्षित चुनाव क्षेत्रों से चुनाव जीत लेना काफ़ी नहीं है।

देश की स्वतंत्रता के लिए गांधी जी के बताये रास्ते पर चलने वाली कांग्रेस के कामों का जायजा लेते हुए जवाहरलाल नेहरू ने आधुनिक हिन्दुस्तान की समस्याओं पर गंभीर विचार करके कुछ बहुत ज़रूरी बातें की थीं जो आज भी कांग्रेस के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं ----

१९२९ में भारतीय कांग्रेस कमेटी ने यह प्रस्ताव पारित किया कि --- भारतीय जनता की भयंकर गरीबी और दरिद्रता का कारण सिर्फ़ विदेशियों द्वारा उसका शोषण नहीं, बल्कि हमारे समाज का आर्थिक संगठन भी है जिसे विदेशी हुकूमत कायम रखे हुए है ताकि यह शोषण जारी रहे। भारतीय जनता की गरीबी और दरिद्रता को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि समाज के

आर्थिक और सामाजिक संगठन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाकर यह घोर विषमता हटाई जाये। केवल राजनीतिक परिवर्तन काफी नहीं है।

नेहरू कांग्रेस को याद दिलाते हैं कि -- अंग्रेजों के जाने के बाद केवल पूंजीपतियों के हाथों में मुल्क का शासन-सूत्र नहीं जाना चाहिए, जैसा कि अभी एक ब्रिटिश कंपनी के हाथों में है। स्पष्टतः यह कांग्रेस की नीति नहीं हो सकती। क्योंकि हमने ही यह एलान किया है कि हम जनता के शोषण के ख़िलाफ़ हैं। जनता को और उसके जरिए कांग्रेस संगठन को मजबूत बनाना अपने इस उद्देश्य के लिए जरूरी है। सिर्फ़ जनता ही उस लड़ाई को सच्ची ताक़त दे सकती है। सिर्फ़ उसी के सहारे राजनीतिक लड़ाई भी लड़ी जा सकती है। पण्डित नेहरू आगाह करते हैं कि कोई बात ज़्यादा दिन तक याद नहीं रहा करती। बहुत-से लोग भारत और कांग्रेस का यह आधुनिक इतिहास भूल जाते हैं।

जवाहरलाल नेहरू ने देश में जो सार्वजनिक क्षेत्रों का निर्माण करके आय के साधनों को बढ़ाया था। वे आज संकट में हैं। कई साल बीत गये, इस संकट पर कांग्रेस में कोई गंभीर विचार-विमर्श देखने-सुनने में नहीं आया। देश के रईसों को कोसते रहने से तो कोई काम नहीं चलेगा। निजीकरण के द्वार तो कांग्रेस ने ही देश में खोले हैं जिनके परिणाम सुखद नहीं है। लूट का ही बोलबाला है। बाज़ार पूरे भारतीय समाज को अपनी जद में घेरता चला आ रहा है। वह अब दबे-छिपे ही नहीं, खुलेआम राजनीति को नियंत्रित कर रहा है। अपने स्वार्थ के लिए शिक्षा, रोज़गार और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में मनमानी

उत्तराखंड में इसी महीने लागू होगा यूसीसीः धामी

फिल्म और वेडिंग डेस्टिनेशन के रूप में विकसित होगा उत्तराखंड

संजय बलोदी प्रखर

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री सिंह ने ऐलान करते हुए कहा है कि राज्य में यूनिफॉर्म सिविल कोड इसी महीने से लागू किया जाएगा। उन्होंने इसे प्रदेश के विकास और सांस्कृतिक एकता के लिए ऐतिहासिक कदम बताया।धामी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र ‍मोदी के नेतृत्व में देश में सांस्कृतिक पुनर्जागरण की शुरुआत हो चुकी है और उत्तराखंड इस दिशा मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि पौराणिक मंदिरों का सुंदरीकरण तो से जारी है और मां पूर्णागिरी के भक्तों लिए विशेष शारदा कॉरिडोर बनाया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने बताया राज्य में सख्त धर्मातंरण दंगा विरोधी कानून बनाने का भी काम किया। उन्होंने लैंड जिहाद के खिलाफ बड़ी कारवाई करते हुए 7,000 एकड़ अतिक्रमण से मुक्त कराई गई है। नकलविरोधी कानून को भी उन्होंने पूरे देश के लिए मॉडल बताया और कहा कि 100 से अधिक नकल करने वाले को जेल भेज दिया उत्तराखंड को फिल्म शूटिंग और बेडिंग स्टनेशन के रूप में विकसित किया जाता है।

राजाराम लस्सी वाले

* रेटः 20 रुपए पीस, * रेटः 50-70 रुपए ग्लास, * लोकेशनः बैरहना * लोकेशनः मालवीयनगर, * खासियतः यहां के मालिक को लोग देहाती बुलाते थे। तभी से दुकान का नाम देहाती रसगुल्ला पड़ गया। * खासियतः दुकान 1897 से चल रही है। यहां की रबड़ी, जलेबी और काली गाजर का हलवा भी फेमस हैं।

कुंभ और सरस्वती

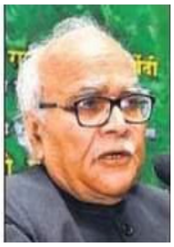

डॉ. राजेंद्र
रंजन चतुर्वेदी
सेवानिवृत्त
प्रोफेसर

कुंभ के संबंध में स्कंद पुराण में एक अत्यंत रोचक कथा उल्लिखित है। देवताओं और दानवों ने समुद्र मंथन किया, उसमें से अनेक रत्न प्राप्त हुए, उनमें एक अमृत कुंभ भी मंथन से प्राप्त हुआ । उस कुंभ के लिए देवता और दानवों में परस्पर संघर्ष होने लगा। इंद्र का पुत्र उस कलश को ले कर भागा। अमृत हेतु सभी उसके पीछे लग गए, कुंभ कलश भी एक हाथ से दूसरे हाथ पहुंचने लगा।

देवताओं में भी सूर्य, चंद्र और गुरु का अमृत कलश-संरक्षण में विशेष सहयोग रहा था, चंद्र ने कलश को गिरने से, सूर्य ने फूटने से तथा बृहस्पति ने असुरों के हाथ में जाने से बचाया था। फिर भी इस संघर्ष में कुंभ में से अमृत की बूंदें छलकीं, ये अमृत बूंदें प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और उज्जयिनी नगरी में छलकी थीं, अतः ये ही स्थल । कुम्भ पर्व के स्थल बन गए, ये ही वे चार तीर्थ हैं जो अमृत बिंदु के पतन से अमृतत्व पा गए । धार्मिक गणों की आस्था है कि कलश से छलकी बूंदों से न सिर्फ यह तीर्थ अपितु यहां की पवित्र नदियां भी (गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी एवं क्षिप्रा) अमृतमयी हो गई हैं।

कुंभ के अवसर पर किसी जमाने में जीवन की नई परिस्थितियों में नए विचारों को लेकर शास्त्रार्थ हुआ करते थे । प्रयाग में सरस्वती का अर्थ वाणी के प्रवाह से है। कुंभ का इतिहास गवाह

सरस्वती कूप

* लोकेशनः संगम मार्ग, अकबर किला

* संगम से दूरीः 3.1 किमी.

* कब जाएंः 8 am-8pm

* खासियतः सरस्वती कूप एक पवित्र कुआं है। ऐसी मान्यता है कि कोई इस कुएं के जल से स्नान करे याये जल ग्रहण करे तो उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

है कि इस पर्व या अवसर पर बडे-बडे विचारक अपने विचारों से लोकजीवन को लाभान्वित करते रहे हैं । लोकजीवन में आने वाले बडे-बडे परिवर्तनों के लिये इस अवसर का उपयोग किया जाता रहा है । मनुष्य से मनुष्य का मिलन कोई साधारण घटना नहीं होती । कभी -कभी तो एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से मिलता है और बस , इतिहास बदल जाता है । इतिहास में ऐसे कितने ही प्रसंग आप देख सकते हैं कुंभ के मेलों का इतिहास कोई छोटा-मोटा इतिहास नहीं है ।लोक स्वयं ही अपने लिये अपने द्वारा कुंभमेले का आयोजन करता रहा है । शास्त्रार्थ के वे प्रसंग , जिन्होंने भारत के तत्वदर्शन का विकास किया ! उसकी निरन्तरता ! कितने प्रकार के मेले ? नदियों के तट पर , सरोवरों पर , पहाडों पर , कूपों के पास बडे पवित्र भाव से उत्सव-धर्म की दीक्षा लेते हुए ये मेले न जाने कब से लग रहे हैं ! यदि ये मेले न होते तो लोकजीवन का प्रत्यक्ष संवाद कैसे होता ?समाज और राज्य का विकास कैसे होता ? सच पूछो तो लोकतन्त्र का विकास भी इन मेलों के बीच ही होता रहा है , निरन्तर हो रहा है ।₹? नदियों के तट पर , सरोवरों पर , पहाडों पर , कूपों के पास बडे पवित्र भाव से उत्सव-धर्म की दीक्षा लेते हुए ये मेले न जाने कब से लग रहे हैं ! तमिलनाडु में दक्षिण भारत का कुंभमेला मासी महीने में आता है। इस दिन देवी-देवताओं की प्रतिमाओं को जुलूस के रूप में समुद्रस्नान के लिए ले जाया जाता है। सागर से दूर होने वाले स्थानों में स्नान और जलविहार का अनुष्ठान नदी या तालाबों में संपन्न किया जाता है। गुरु ग्रह के सिंह राशि में प्रवेश करने पर कुंभकोणम के प्रसिद्ध जलाशय महामाहम् में दक्षिण भारत का कुंभमेला जुड़ता है। उन दिनों अपार जनसमूह कुंभकोणम् में उमड़ पड़ता है। राजा और रंक एक साथ

कुंभकोणम् के जलाशय में डुबकी लगाते हैं। ऐसा माना जाता है कि उस समय भारत की समस्त पवित्र नदियां कुंभकोणम् के जलाशय में आ कर मिलती हैं।

महाकुंभ का इतिहास

महाकुंभ का इतिहास बहुत पुराना है। कुछ कथाओं में बताया गया है कि महाकुंभ का आयोजन उन स्थानों पर किया जाता है, जहां समुद्र मंथन के दौरान अमृत कलश की कुछ बूंदें गिरी थीं। ये स्थान हैं प्रयागराज, उज्जैन, हरिद्वार और नासिक। मान्यता है कि जब समुद्र मंथन से अमृत कलश निकला, तो देवताओं और राक्षसों के बीच लड़ाई हुई। भगवान विष्णु ने मोहिनी अवतार लेकर अमृत कलश को जयंत को सौंपा, जिन्होंने कौवे का रूप धारण कर अमृत कलश को राक्षसों से छीन लिया और जब वह इसे लेकर भाग रहे थे तो अमृत कलश की कुछ बूंदे इन स्थानों पर गिर गई थी। तभी से इन स्थानों पर कुंभ मेला आयोजित किया जाता है।

लोकस्वीकृति

गोरख नाथ बहुत बडे घुमक्कड थे । उस समय देश में वाममार्ग का बहुत प्रभाव था,स्त्रीदेश [संभवतः कामरूप] में मछन्दरनाथ वाममार्ग को स्वीकार कर चुके थे । उज्जयिनी में

कुंभ के समय गोरख का कण्हपा से शास्त्रार्थ हुआ था ,जो [पंचमकार के] वाममार्ग के समर्थक थे । राजा भर्तृहरि {भरथरी} को गोरख ने जोगी बना लिया था ,उनकी रानी माता सामदेई कण्हपा का समर्थन कर रही थी। गोरखनाथ ने वाममार्ग का खंडन किया और स्त्री को मां के रूप में प्रतिष्ठित किया। कण्हपा लगभग पराजित हो चुके थे, लेकिन सामदेई उत्साहित कर रही थी, कण्हपा ने गोरखनाथ से पूछा कि तुम्हारा प्रमाण क्या है? गोरखनाथ ने सहजभाव से कह दिया कि मेरे गुरु मत्स्येंद्रनाथ प्रमाण हैं। तब कण्हपा ने कहा कि तेरा गुरु तो स्त्रीदेश में है, वामसाधना कर रहा है। गोरखनाथ को मानो तीर लग गया। तब ये सुन्दर स्त्री का वेश बना कर मृदंग बजाते हुए गये थे >> जाग मछन्दर गोरख आया । आगे चलकर गोरखनाथ का मत लोकस्वीकृत हुआ।

नेतराम कचौड़ी

* रेटः 120 रुपए प्लेट (5 कचौड़ी)
* लोकेशनः कटरा चौराहा
* खासियतः दुकान 168 साल पुरानी है। खासियत यह है कि इसके सारी डिश देशी घी से बनती हैं। यहां के दही जलेबी, समोसे, पकौड़े भी फेमस है.

दिल्ली किसकी!

देश के दो सबसे बड़े सियासी दलों के लिए वर्ष 2025 कई चुनौतियां लेकर आया है। भाजपा को जहां इस वर्ष में नए अध्यक्ष का चुनाव करना है, वहीं मुंबई मनपा समेत सभी मनपाओं निकायों में में जीत हासिल करनी है महाराष्ट्र के स्थानीय निकाय चुनावों में भी विधानसभा चुनाव का प्रदर्शन दोहराने की चुनौती है। इसके साथ ही साल के शुरुआत में ही उसे दिल्ली विधानसभा चुनाव में अपनी ताकत आजमानी है। जबकि प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस को इंडिया गठबंधन के भीतर से मिल रही चुनौतियां का सामना करने के साथ ही संगठन को चुस्त-दुरुस्त बनाने के लिए कई जतन करने होंगे। आप के हाथों से दिल्ली सल्तनत को छीनना इतना भी आसान नहीं है । केजरीवाल के लिए भी पिछले चुनावों की तरह चुनाव तैयारियां और जीत आसान नहीं है। दिल्ली चुनाव तिथि की घोषणा के उपरांत विधानसभा चुनाव की दस्तक तेज हो गई है। फरवरी के पहले सप्ताह में चुनाव भी होगा और परिणाम भी घोषित होने हैं

दिल्ली विधानसभा चुनाव भाजपा के लिए नाक का सवाल है। वर्ष 2020 के चुनाव में दिल्ली की 70 विधानसभा सीटों में से भाजपा महज 8 सीटों पर ही जीत दर्ज कर पाई थी, लेकिन इस बार वह पूरी ताकत के साथ मैदान में उतरने की तैयारी

में है। एक-एक विधानसभा सीट पर वह उम्मीदवारों के चयन में पूरी सावधानी बरत रही है। जिसकी वजह से उम्मीदवारों की घोषणा होने में विलंब भी हो रहा है।

बिहार चुनाव भी चुनौती से कम नहीं: भाजपा के लिए दिल्ली के बाद

बिहार विधानसभा चुनाव भी बड़ी चुनौती है। बिहार में इस साल के आखिर में चुनाव होने हैं। इसके साथ ही बाबा साहेब डॉ भीमराव आंबेडकर के अपमान का मुदा बनाकर कांग्रेस समेत अन्य विपक्षी दल जिस तरह भाजपा के खिलाफ देश भर में माहौल बना रहे हैं। भाजपा को इस चुनौती से भी जूझना पड़ सकता है। वर्ष चुनौतियों का अंबार लेकर आया है। इंडिया गठबंधन के घटक दल उसके खिलाफ मोर्चा खोल सकते हैं। तृणमूल कांग्रेस प्रमुख और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान ही इंडिया गठबंधन बाका नेतृत्व अपने हाथ में लेने की मंशा जता दी थी। कांग्रेस को गठबंधन के साथियों के बीच सामंजस्य बनाने की चुनौती से साल भर जूझना पड़ सकता है। इसके साथ ही हरियाणा, महाराष्ट्र के चुनाव नतीजों ने जमीनी स्तर पर कांग्रेस की सांगठनिक खामियों की कलई खोल दी है।। । ऐसी स्थिति में संगठन को चुस्त-दुरुस्त बनाने के लिए जमीन पर काम करने के अलावा कांग्रेस के पास कोई रास्ता नहीं है। ●

श्रीराम जी की महाआरती नंदा देवी डोली शोभा यात्रा से होगी कौथिग की शुरुआत

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की उपस्थिति होगी दर्ज

नवी मुंबई। उत्तराखण्डी समाज के सबसे बड़े सांस्कृतिक आयोजन मुंबई कौथिग के 16वें सीजन का शुभारंभ 22 जनवरी को प्रभु श्रीराम की भव्य महाआरती के साथ रामलीला मैदान, नेरुल नवी मुंबई में होगा। देवभूमि स्पोर्ट्स फाउंडेशन के अध्यक्ष सुरेश राणा जी की अध्यक्षता और कौथिग के मुख्य संयोजक मनोज भट्ट के नेतृत्व में आयोजित मुंबई कौथिग 2025 के उद्घाटन समारोह में उत्तराखंड और महाराष्ट्र की राजनीतिक, सामाजिक और सिने जगत की कई प्रमुख हस्तियां शामिल होंगी। मुंबई कौथिग के पदाधिकारी सुरेश काला और मीडिया प्रभारी पत्रकार गोविंद आर्य ने बताया कि कौथिग की शुरुआत मां नंदा देवी की राजजात यात्रा की झांकी से होगी। प्रवीन चंद ठाकुर ने बताया कि यह शोभायात्रा नेरुल के गांवदेवी मंदिर से शाम 3 बजे से शुरू होगी और मां नंदा के जयकारों के साथ कौथिग प्रांगण तक पहुंचेगी। इस शोभायात्रा में उत्तराखंडी पारंपरिक परिधान में महिलाएं बड़ी संख्या में शिरकत करेंगी और उत्तराखंड के मशूहर छलिया कलाकार रंगारंग नृत्य प्रस्तुत करेंगे। कौथिग के संयोजक मनोज भट्ट ने बताया कि इस बार मुंबई कौथिग का शुभारंभ 22 जनवरी को हो रहा है और यह अदभुत संयोग है कि 22 जनवरी को प्रभु श्रीराम जन्मभूमि मंदिर अयोध्या में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा की प्रथम वर्षगांठ भी है। इसलिए, इस बार हम मुंबई कौथिग-2025 के 16वें संस्करण के शुभारंभ और श्रीराम जन्मभूमि मंदिर अयोध्या में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा की प्रथम वर्षगांठ के उपलक्ष में रामलीला मैदान, नेरुल में प्रभु श्रीराम जी की भव्य महाआरती का आयोजन करने जा रहे हैं। रामलीला मैदान में प्रभुश्री राम की 51 थालियों से महाआरती की जाएगी। इसके अलावा प्रभु श्रीराम की कुछ झांकियों के माध्यम से कौथिग 2025 के शुभारंभ को भव्य और दिव्य बनाने की सभी तैयारियां की गई हैं। कौथिग आयोजन समिति ने भारी से भारी संख्या में 22 जनवरी को शाम 4 बजे, रामलीला मैदान नेरूल, नवी मुंबई पहुंचकर प्रभु श्रीराम की महाआरती का पुण्य लाभ लेने की अपील की है।

कर्मयोग के दर्शन का केंद्र बनेगा नारायणपुरम तीर्थ

इंदौर से शहादा आएंगे श्रीहरि नारायण

नंदुरबार । भगवान विष्णु की रियल गोल्ड सहित पंच धातुओं से बनी 21 हज़ार किलो भार वाली 24 करोड़ रुपए में निर्मित 11 फिट के शयन मुद्रा वाली श्रीमूर्ति इंदौर से नंदुरबार के शहादा लाई जाएगी। महायात्रा 9 जनवरी को इंदौर से प्रारंभ होगी। इस दौरान सुबह 9.30 से 11 बजे तक मूर्ति को दर्शन के लिए राजबाड़ा में रखा जाएगा। इसके बाद सैकड़ों भक्तों के साथ महायात्रा राऊ, मानपुर, धामनोद, सेंधवा होते हुए 11 जनवरी को शाहदा धाम पहुंचेगी।

सनातन धर्म का सर्वश्रेष्ठ मंदिर

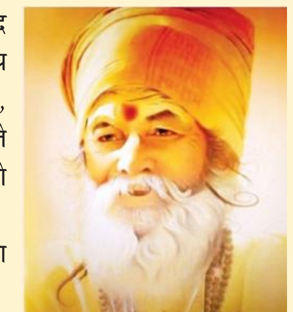

कृपा आशीर्वाद
ब्रह्मलीन सद्गुरु
श्री अच्युतानंदनजी
महाराज

महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले के शहादा तहसील में श्री नारायणपुरम तीर्थ के निर्माता स्वामी श्री लोकेशानंद जी महाराज कहते हैं, मानव मात्र का कल्याण ही धर्म है। मुझे विश्वास है कि श्री नारायणपुरम तीर्थ मानव कल्याण की राह में एक बड़ा आलोक स्तंभ साबित होगा । यह मंदिर सनातन धर्म के मूल भाव से प्रेरित है । 'सनातन' का शाब्दिक अर्थ है शाश्वत या 'सदा बना रहने वाला', यानी जिसका न आदि है न अन्त। इसीलिए यह धर्म और उसका दर्शन दुनिया के सबसे प्राचीनतम धर्म और दर्शनों में से एक है। जल्द ही सनातन धर्म का सर्वश्रेष्ठ मंदिर बनने जा रहा है। विश्वविख्यात श्री पद्मनाभ स्वामी मंदिर के निर्माण के पांच हजार पांच सौ (5500) वर्षों के बाद भारत भूमि में आज पुनः एक पवित्र विष्णु तीर्थ का निर्माण हो रहा है।

यहां आने वाले भक्तों का मानना है कि यह मंदिर विश्वभर के भक्तों की आस्था का केंद्र बनकर उभर रहा है। 20 एकड़ भूमि में

सद्गुरु श्री लोकेशानंद जी महाराज

फैले इस मंदिर का निर्माण 2018 से शुरू हुआ और उम्मीद है कि 2025 में इसका निर्माण पूरा हो जाएगा। फिलहाल वर्तमान में भक्तों के लिए इसे खोल दिया गया है और हर रोज देश भर से हजारों की संख्या में लोग यहां दर्शन के लिए आ रहे हैं। इस मंदिर में भक्त निवास, भोजशाला, गौशाल जैसे अनेक सेवा प्रकल्प हैं।

समाज और मानव सेवा का भगीरथ संकल्प

इस तीर्थ के निर्माण का बीड़ा उठाया है श्री नारायण भक्ति पंथ ने। इस महान कार्य का संकल्प महान तपस्वी, सर्व शास्त्र विशारद, भक्ति योग के भास्कर एवं श्री नारायण भक्ती पंथ के प्रवर्तक सद्गुरु श्री लोकेशानंद जी महाराज ने लिया है। लोकेशानंद जी महाराज की पावन प्रेरणा से अनेकों

सनातन प्रेमी भक्तों द्वारा सेवा समर्पण के भाव से यह तीर्थ साकार हो रहा है। श्री नारायण भक्ति पंथ के अतिरिक्त पंथ नर सेवा नारायण सेवा के लिए तत्पर है, जिसमें अनेकों जरूरतमंद लोगों तक आवश्यक आर्थिक और अन्य भोजन, वस्त्र तथा मेडिकल, शिक्षा सेवाओं को पंहुचाया जाता है। यहां समय-समय पर आदिवासि कन्याओं को शिक्षा के लिए राशि भी दी जाती है। वृक्षारोपण, रक्तदान एवं पशुओं के लिए भी अनेक प्रकार के प्रकल्प चलाए जाते हैं।

गीता के कर्मयोग के दर्शन का केंद्र बनेगा यह धाम

यह बात बड़ी हैरान कर देने वाली है कि इतनी हिंसा और मार-काट के दौर में शांति और आश्रय की खोज में दुनिया भर के लोग गीता के उपदेशों की तरफ झुक रहे हैं। भगवान श्री नारायण विष्णु के विभिन्न रूपों की भक्ति में लीन हो रहे हैं। केरल में नारायण पद्मनाभ स्वामी के नाम से पूजे जाते हैं, तमिलनाडु में श्री रंगनाथ स्वामी, महाराष्ट्र में विट्ठल, गुजरात में द्वारिकाधीश, वृंदावन में कृष्ण, उत्तराखंड में श्री बद्रीनाथ तथा नेपाल में मुक्तिनाथ एवं सर्वत्र श्री नारायण विष्णु भगवान के नाम से इनकी अर्चना की जाती है। मान्यता है कि समस्त कामनाओं की पूर्ति के साथ परमगति मोक्ष को

प्राप्त करने का सौभाग्य विष्णु भक्तों को ही प्राप्त होता है। कर्म का सिद्धांत देने वाले भगवान विष्णु का समूचा दर्शन मानवता को श्रेष्ठतम स्थान पर लाने के लिए ही है। ऐसे में यह तीर्थ भगवान श्री नारायण के जीवन और दर्शन के प्रति लोगों को खींचने में अहम भूमिका निभाएगा।

विधान परिषद के पूर्व उपाध्यक्ष स्वर्गीय वसंतराव डावखरे की 7वीं पुण्य तिथि के अवसर पर हिवरे कुंभार में सामाजिक कल्याण गतिविधियां उनके सुपुत्र विधानपरिषद सदस्य निरंजन डावखरे ने उनके पैतृक गांव हिवरे कुंभार, जिला. परिषदीय विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को विद्यालय उपयोगी वस्तुएं वितरित की गईं। इस अवसर पर एच.बी. पी. गोविंद महाराज गायकवाड (आलंदी देवाची) ने जनजागरूकता, सामाजिक जागरुकता, नशामुक्ति एवं आज की युवा पीढ़ी विषय पर प्रेरक व्याख्यान एवं समाज कल्याण कार्यक्रम दिया। कार्यक्रम का आयोजन दत्तात्रय आबा तांबे और अतुल साठे. आईएएस अधिकारी कांतिलाल आईआरएस अधिकारी अभिजीत इचके और बड़ी संख्या में ग्रामीण भी मौजूद थे.

मुंबई- महाराष्ट्र सरकार में मत्स्य व्यवसाय और बंदरे मंत्री पद मिलने पर नितेश नारायण राणे का सत्कार करते शिवसेना जिला संपर्क प्रमुख पूर्व विधायक रविंद्र फाटक

मुंबई कांग्रेस विधायक अस्लम शेख के सुपुत्र चिरंजीव हैदर अली और चि. सौ. कां. मरयम अफिफा के विवाह के बाद अतिथि आयोजन में वर वधू को आशीर्वाद देने पहुंचे राज्य के परिवहन मंत्री प्रताप सरनाईक

पनवेल में भारतीय जनता पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में चिकित्सा सहायता कक्ष का उद्घाटन वरिष्ठ भाजपा नेता सांसद रमेश शेठ ठाकुर ने गया। इस वार्ड के माध्यम से विधानसभा क्षेत्र के गरीब एवं ऋणग्रस्त मरीजों को आवश्यक चिकित्सा उपचार हेतु सहायता प्रदान की जायेगी। इस अवसर पर विधायक प्रशांत शेठ ठाकुर सहायता प्रकोष्ठ के प्रमुख श्री रामेश्वर नायक एवं विधायक महेश बाल्दी गणमान्य व्यक्ति के रूप में उपस्थित थे।

ग्रेस आम चुनाव में अक्सर पीछे रह जाती है। अब तो वह पीछे रह जाने के डर से उपचुनाव में भी हिस्सा लेने से कतराने लगी है। पीछे रह जाने के बाद वह अपनी समीक्षा कम करती है, दूसरों पर दोष ज़्यादा लगाती है। उसके नेता कहते ज़रूर हैं कि हम ज़मीनी स्तर पर अपने दल की समीक्षा करेंगे। पर वे अपनी कथनी को करनी में नहीं बदल पाते। काँग्रेस को देखकर कहने का मन होता है कि --- वह ख्वाब है किसी और का, उसे देखता कोई और है। अब यह तो देखने वाले की मनोदशा पर निर्भर है कि वह क्या देखता है? ---- इतने बड़े देश में कुछ नेताओं का सुरक्षित चुनाव क्षेत्रों से चुनाव जीत लेना काफ़ी नहीं है।

देश की स्वतंत्रता के लिए गांधी जी के बताये रास्ते पर चलने वाली कांग्रेस के कामों का जायजा लेते हुए जवाहरलाल नेहरू ने आधुनिक हिन्दुस्तान की समस्याओं पर गंभीर विचार करके कुछ बहुत ज़रूरी बातें की थीं जो आज भी कांग्रेस के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं ----

१९२९ में भारतीय कांग्रेस कमेटी ने यह प्रस्वाव पारित किया कि --- भारतीय जनता की भयंकर गरीबी और दरिद्रता का कारण सिर्फ़ विदेशियों द्वारा उसका शोषण नहीं, बल्कि हमारे समाज का आर्थिक संगठन भी है जिसे विदेशी हुकूमत कायम रखे हुए है ताकि यह शोषण जारी रहे। भारतीय जनता की गरीबी और दरिद्रता को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि समाज के आर्थिक और सामाजिक संगठन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाकर यह घोर विषमता हटाई जाये। केवल राजनीतिक परिवर्तन काफी नहीं है।

नेहरू कांग्रेस को याद दिलाते हैं कि -- अंग्रेजों के जाने के बाद केवल पूंजीपतियों के हाथों में मुल्क का शासन-सूत्र नहीं जाना चाहिए, जैसा कि अभी एक ब्रिटिश कंपनी के हाथों में है। स्पष्टतः यह कांग्रेस की नीति नहीं हो सकती। क्योंकि हमने ही यह एलान किया है कि हम जनता के शोषण के ख़िलाफ़ हैं। जनता को और उसके जरिए कांग्रेस संगठन को मजबूत बनाना अपने इस उद्देश्य के लिए जरूरी है। सिर्फ़ जनता ही उस लड़ाई को सच्ची ताक़त दे सकती है। सिर्फ़ उसी के सहारे राजनीतिक लड़ाई भी लड़ी जा सकती है। पण्डित नेहरू आगाह करते हैं कि कोई बात ज़्यादा दिन तक याद नहीं रहा करती। बहुत-से लोग भारत और कांग्रेस का यह आधुनिक इतिहास भूल जाते हैं।

जवाहरलाल नेहरू ने देश में जो सार्वजनिक क्षेत्रों का निर्माण करके आय के साधनों को बढ़ाया था। वे आज संकट में हैं। कई साल बीत गये, इस संकट पर कांग्रेस में कोई गंभीर विचार-विमर्श देखने-सुनने में नहीं आया। देश के रईसों को कोसते रहने से तो कोई काम नहीं

हंसना ज़रूरी है

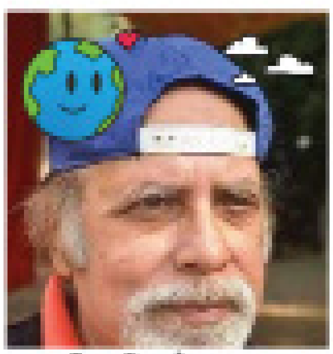

- वीर विनोद छाबड़ा

एंजियोप्लास्टी के बाद डिस्चार्ज पर डॉक्टर ने मुंहजुबानी जो तीन-चार सलाह दी थीं उनमें से एक थी सर्दी से बच कर रहना और दूसरी सलाह तो बहुत अहम थी कि मुस्कुराना ही काफ़ी नहीं है. हंसा भी करो. हम बाग़ बाग़ हो गए. ऐसा तो हम मुद्दत से करते आये हैं. बल्कि पैदाइशी हंसोड़ हैं. हम खुशी ख़ुशी घर आये लेकिन दो दिन बाद हमें फिर अस्पताल में भर्ती होना पड़ा. वज़ह रही पेट ख़राब हो गया. लेकिन चार दिन बाद लौट आये. वहां भी ट्रीटिंग डॉक्टर ने कहा था - खुश रहा करो. अब चार महीने से ज्यादा हो चुके हैं लेकिन हंसना नसीब में नहीं है. जो आता है, यही कहता है - बहुत कमजोर हो गए हो. वो हेल्थी होने के चार-पांच नुस्खे बता कर और रेस्ट करो की अड्वाइज़ देकर चला जता है. हंसी की तो बात ही नहीं. सोचता होगा, कहीं जोर से हंसने से हार्ट अटैक न आ जाए. हम कहते हैं आ जाये. हंसते हुए जाना तो अच्छा है. पत्नी की हमेशा शिकायत रहती है, बहुत काम करना पड़ रहा है. काम हो तो वो हंसे कैसे? आस-पास पड़ोसी हैं, उनके पास फुर्सत है. मगर हास्यबोध नहीं है. ये हास्यबोध जन्मजात होता है. चुटकुलों की किताबें पढ़ने से नहीं आती है. और फिर चुटकुले सुनाने का भी तरीका होता है. पड़ोस में एक मार्क्सवादी मित्र हैं. पिताजी के भी साथी रहे हैं. कभी कभी उनके घर चला जाता हूँ. मगर वो सिर्फ पॉलिटिक्स पर चर्चा करते हैं. एक पार्टी विशेष को जो सत्ता में भी नहीं है, उसे हर समय कोसते रहते हैं. हमें बहुत उलझन होती है. जो सत्ता में है ही नहीं उसकी नीतियों को क्यों कोसना? कोसना है तो अपनी पार्टी को कोसो. इससे हमारी टेंशन और ज्यादा बढ़ जाती है. अब हमने उनके यहाँ जाना बंद कर दिया है. हम यों घुट घुट कर विदा होना नहीं चाहते. लोग हंसना ही भूल गए हैं। टीवी पर कार्टून देखते हैं, न हंसी आये चेहरे पर मुस्कुराहट तो आती है. दिल को थोड़ा चैन मिलता है. कामना कर रहे हैं किसी तरह दो महीने कट जाएँ. सर्दी भी कम हो जायेगी और पार्क में थोड़ा बैठना भी शुरू कर देंगे.

आजाद पार्क

*** लोकेशनः जॉर्ज टाउन, * संगम से दूरीः 5 किमी.**

*** कब जाएंः 5 am-9 pm**

*** खासियतः इसे पहले अल्फ्रेड पार्क कहा जाता था। यहीं पर स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आजाद ने खुद को गोली मारी थी। उनके नाम पर ही अब इसे आजाद पार्क कहा जाता है।**

प्रयागराज में यह भी देखें

सोमेश्वर महादेव

* लोकेशनः मित्रनगर, झलवा, * संगम से दूरीः 12.1 किमी.
* कब जाएंः 6 am - 7:30 pm
* खासियतः पौराणिक कथा के अनुसार, मंदिर की स्थापना चंद्रदेव ने क्षयरोग के श्राप से मुक्त होने के लिए की थी। यहां लोग गंभीर बीमारियों से निजात पाने के लिए आते हैं।

धरोहर

विमल मिश्र
वरिष्ठ पत्रकार
साहित्यकार

अथ कुंभ कथा

कुंभ विश्व का सबसे बड़ा मेला ही नहीं, सर्वोपरि महापर्व है। शांति और विश्रांति का दुर्लभतम अमृत बांटकर मर्त्य को अमर्त्य बनाने का उत्सव। अमृत रूपी इस अमरत्व के लिए किसी वर्ग, वर्ण या योग्यता की आवश्यकता नहीं। इस अमृत पर सबका अधिकार है। प्रयागराज में आज से प्रारंभ हुए महाकुंभ के सभी पहलुओं को समेटती "दैनिक भास्कर" में प्रकाशित वरिष्ठ पत्रकार विमल मिश्र जी का लेख। दैनिक भास्कर महाकुंभ पर देशभर के चुनिंदा लेखकों, इतिहासकारों,विश्लेषकों के हर दिन एक विस्तृत लेखों की श्रृंखला प्रकाशित कर रहा है जो पठनीय, संग्रहणीय भी है।

प्रयागराज (उन दिनों इलाहाबाद) के कुंभ में 6 फरवरी, 1989 को डेढ़ करोड़ लोगों की उपस्थिति थी। गिनेज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने प्रमाणित करते हुए इसे उस समय तक किसी एक उद्देश्य के लिए एकत्रित, विश्व में लोगों की सबसे बड़ी भीड़ करार दिया था। 55 दिनों तक चले 2013 के पिछले कुंभ में तो प्रयागराज 14 जनवरी से 10 मार्च के बीच विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला शहर बन गया था। इस बार के कुंभ में फिर प्रयागराज अपना पुराना रिकॉर्ड तोड़ने को उतारू है, क्योंकि पौष पूर्णिमा 13 जनवरी से महाशिवरात्रि व्रत 26 फरवरी के बीच यहां, सिर्फ पांच किलोमीटर के दायरे में देश और विदेशों के अलग-अलग भागों से आए नाना प्रकार के लोग 10 करोड़ लोग एकत्र होने जा रहे हैं।

शाही स्नान

13 जनवरी, 2025 - पौष पूर्णिमा
14 जनवरी, 2025 - मकर संक्रांति
29 जनवरी, 2025 - मौनी अमावस्या
3 फरवरी, 2025 - वसंत पंचमी
12 फरवरी, 2025 - माघी पूर्णिमा
26 फरवरी, 2025 - महाशिवरात्रि पर्व (अंतिम शाही स्नान

प्रयागराज में यह भी देखें

आनंद भवन

*** लोकेशनः टैगोर टाउन * संगम से दूरीः 5.2 किमी.**
*** कब जाएं: 9:30 am–5 pm**
*** खासियतः एक समय यह नेहरू परिवार का निवास स्थान हुआ करता था। पंडित नेहरू के जीवन से जुड़े के कई फोटोज यहां देखने को मिलते हैं। ये सोमवार को बंद रहता है।**

विश्व के सिर्फ 16 देशों को छोड़ कोई भी देश ऐसा नहीं है, जिनकी पूरी आबादी भी 10 करोड़ से अधिक हो।

कुंभ को - जिसे यूनेस्को ने 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' करार दिया है - प्रायः लोग मेले और धार्मिक आयोजन के रूप में देखते हैं और विज्ञान के आधार को भूल जाते हैं। जब - जब कुंभ का आयोजन होता है सूर्य पर हो रहे विस्फोट बढ़ जाते हैं, जिसका दुष्प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है। सूर्य पर ये परिवर्तन प्रत्येक 11-12 वर्ष के अंतराल पर होते हैं। भारत के प्राचीन ऋषियों और गुरुओं ने गणनाएं कर हमारी पृथ्वी की ऐसी जगहों को चिह्नित किया, जहां मनुष्य जाति पर घटना विशेष का प्रबल प्रभाव पड़ता है। हमारे कुंभ मेले ऐसे स्थानों पर होते हैं, जहां एक संपूर्ण ऊर्जा मंडल उपस्थित है। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूम रही है, इसलिए वह निरंतर एक 'अपकेंद्रिय बल', यानी केंद्र से बाहर की ओर फैलने वाली ऊर्जा पैदा करती है। पृथ्वी के 0 से 33 डिग्री अक्षांश में यह ऊर्जा हमारे तंत्र पर मुख्य रूप से लम्बवत व उर्ध्व दिशा में काम करती है। खास तौर से 11 डिग्री अक्षांश पर तो बिलकुल सीधे ही ऊपर की ओर जाती है। इन स्थानों में से कइयों पर आप नदियों के समागम पाएंगेई इसलिए इन स्थानों पर स्नान के विशेष लाभ है। अगर दिवस विशेष पर कोई मनुष्य यहां रहता है तो उसके लिए दुर्लभ संभावनाओं के द्वार खुल जाते हैं। कुंभ ऐसा ही अवसर लेकर आता है।

सभी नवग्रहों में से सूर्य, चंद्र, वृहस्पति अर्थात गुरु और शनि की भूमिका कुंभ में सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है। जब अमृत कलश को लेकर देवों और राक्षसों के बीच युद्ध चल रहा था, तब कलश की खींचातानी में शनि ने इंद्र की कोप से रक्षा की, बृहस्पति, यानी गुरु ने कलश को छुपाया, सूर्यदेव ने कलश को फूटने और चंद्रमा ने अमृत को बहने से बचाया। इसीलिए तो जब इन ग्रहों का योग संयोग एक राशि में होता है, कुंभ का

आयोजन तभी होता है। ज्योतिष के विद्वानों ने इसका संबंध अमावस्या और पूर्णिमा से जोड़ा है। कुंभ में स्नान करने की तिथि ग्रहों और नक्षत्रों की गतिविधियों से ही निश्चित होती है। विशेषकर सूर्य, चंद्र और गुरु ग्रहों की गति। सूर्य एवं ब्रहस्पति के एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने के आधार पर ही कुंभ का स्थान और तिथि निर्धारित की जाती है। पूर्ण कुंभ मेला हर 12वें वर्ष प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में बारी - बारी से और अर्द्धकुंभ मेला हर छठे वर्ष आयोजित किया जाता है।

बृहस्पति ग्रह एक राशि में एक वर्ष तक टिकता है। इस तरह हर राशि में जाने में उसे लगभग 12 वर्ष लग जाते हैं। इसीलिए हर 12 साल बाद उसी स्थान पर कुंभ का आयोजन किया जाता है। निर्धारित चार स्थानों में अलग - अलग स्थान पर हर तीन वर्ष में कुंभ का योग बनता है। जब सूर्य मेष राशि में गोचर कर चुके हों और बृहस्पति देव कुंभ राशि में, तब कुंभ हरिद्वार में, जब गुरु ग्रह और सूर्य ग्रह दोनों सिंह राशि में मौजूद होते हों, तब नासिक में और जब सूर्य मेष राशि में विराजमान हों और गुरु सूर्यदेव की राशि सिंह में विराजमान हों, तब कुंभ का आयोजन उज्जैन में होता है। इसे सिंहस्थ कुंभ भी कहते हैं। प्रयागराज में कुंभ का आयोजन बृहस्पति देव के वृषभ और सूर्य देव के मकर राशि में होने पर होता है। 14 जनवरी, 2025 को सूर्यदेव मकर राशि में गोचर करने वाले हैं। कुंभ प्रत्येक तीन वर्ष में एक - एक बार प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन, और नासिक में आयोजित होता है। अर्ध कुंभ छह वर्ष में एक बार हरिद्वार और प्रयागराज के तट पर हाता है। वहीं पूर्ण कुंभ मेला 12 वर्ष में एक बार,

जो प्रयागराज में होता है। 144 वर्षों में 12 कुंभ पूर्ण होने पर एक महाकुंभ का आयोजन होता है। इससे पहले महाकुंभ प्रयागराज में 2013 में आयोजित हुआ था। माघ मेला नाम से प्रति वर्ष माघ मास में प्रयागराज में एक लघु कुंभ मेला भी होता है, जब भक्त लाखों की संख्या में गंगा-यमुना के बीच में कल्पवास करने आते हैं। शहर का कतरा - कतरा इन दिनों केवल भीड़ से भरा होता है। उनके पास सोने तो छोड़ कई बार बैठने की भी जगह नहीं होती। वे अलग-अलग जगहों पर आग जलाकर उसके चारों ओर बिखरे, अपनी भाषा व बोली में अपनी-अपनी संस्कृति और परंपरा के गीत गाते नाचते दिखते हैं। वे यहां सुविधा के लिए नहीं, अपनी आस्था के लिए आए होते हैं, यह कामना लिये कि कुंभ उनके लिए अमृतमय बनेगा।

पौराणिक कथा

कुंभ वह श्रेष्ठ पदार्थ है, जो 'अमृत' कलश' होने से अविनाशी है। कई विद्वान इसका उद्गम ऋग्वेद और अन्य पुराणों में खोजते हैं। इसका लिखित प्रमाण 'विष्णु पुराण', 'पद्म पुराण' व 'स्कंद पुराण' के अलावा 'भागवत', 'रामायण' और 'महाभारत' में उपस्थित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार कुंभ की शुरुआत समुद्र मंथन से हुई थी। महर्षि दुर्वासा के श्राप के कारण जब इंद्र सहित सभी देवता जब दुर्बल पड़ गए और असुरराज बलि के नेतृत्व में राक्षसों ने देवताओं को परास्त कर तीनों लोकों पर राज कायम कर लिया, तब त्रस्त हो कर सभी देवगण ब्रह्माजी की अगुवाई में वैकुंठनाथ विष्णु भगवान के पास अपनी करुण गुहार लेकर गए। भगवान विष्णु ने देवताओं को राक्षसों के साथ मिलकर हिमालय के उत्तर में स्थित क्षीर सागर का मंथन करके अमृत का संधान करने के लिए कहा, ताकि अमर होकर वे राक्षसों को पराजित कर सकें। वासुकि नाग रज्जु बने, मंदराचल पर्वत मथनी तथा स्वयं भगवान विष्णु कच्छप अवतार लेकर पर्वत को अपने पीठ पर धारण कर उसका आधार बन गए। मंथन के अंत में 14वां रत्न अमृत कुंभ लेकर खुद प्रकट हुए वैद्यराज धन्वंतरि, जिसे इंद्र ने अपने पुत्र जयंत को सौंपकर राक्षसों से दूर रखने के लिए स्वर्ग की ओर दौड़ा दिया। अमृत कलश पर अधिकार जमाने के लिए देव और राक्षसों के बीच भयानक युद्ध हुआ। 12 दिवस तक चले देवासुर संग्राम में देवराज इंद्र ने असुरराज बलि को परास्त कर इंद्रलोक वापस ले लिया।

कुंभ पर्व की उत्पत्ति समुद्र मंथन से निकले इसी अमृत कुंभ से हुई। अमृत घट को धन्वंतरि लेकर चले तो चार स्थानों पर अमृत कण छलक पड़े। पहली बूंद प्रयाग के त्रिवेणी संगम पर, दूसरी हरिद्वार में गंगा किनारे, तीसरी उज्जैन में क्षिप्रा तट पर और चौथी नासिक में गोदावरी की गोद में समाहित हुई। कुंभ मेला इन्हीं तीर्थ स्थलों पर, निश्चित अंतराल से आयोजित होता है। देवों का एक दिवस भूलोक में 12 वर्षों के बराबर होता हैं, इसीलिए हर 12 वर्ष में पूर्ण कुंभ का आयोजन किया जाता है। मान्यता है कि कुंभ भी बारह होते हैं, जिनमें चार का आयोजन धरती पर होता है और आठ का देवलोक में।

कुंभ का लिखित प्रमाण चीनी यात्री ह्वेन त्सांग के यात्रा वृत्तांतों में मिलता है, जो सम्राट हर्षवर्धन के शासनकाल (629-645 ईस्वी) में भारत आया था। हर्षवर्धन प्रयाग में हर पांचवें वर्ष धर्म सभा का आयोजन करते थे

और मुक्त हस्त से दान करते थे। यद्यपि इससे पहले 600 ईस्वी पूर्व - बौद्ध लेखों में भी नदी मेलों की उपस्थिति बताई गई है, तथापि कुछ विद्वानों का मत है कि कुंभ मेले का प्रवर्तन जगद्गुरु शंकराचार्य ने नवीं शताब्दी में वैदिक धर्म की रक्षा के लिए चार पीठों की स्थापना के बाद धर्म चर्चा के उद्देश्य से किया। स्वामी रामानंदाचार्य ने 14वीं और मधुसूदन सरस्वती ने 15वीं सदी में इसे और दृढ़ बनाया। धर्म रक्षा के लिए उन्होंने शास्त्र के साथ शस्त्र से भी सुसज्ज नागा साधुओं की विशाल सेनाएं बनाईं। आज इनके दल 'अखाड़े' कहे जाते हैं। संन्यासी, वैरागी और संतों के साथ ये नागा साधु ही कुंभ पर्व की सबसे बड़ी शोभा हैं। नागा साधुओं को हिंदू धर्म का सेनापति माना जाता है, इसलिए कुंभ में शाही लाव - लश्कर के साथ 'शाही स्नान' के रूप में पहले स्नान का नेतृत्व इन्हीं द्वारा किया जाता है।

मध्य काल में कुंभ को विभिन्न शाही राजवंशों से संरक्षण प्राप्त हुआ, जिनमें दक्षिण में चौल व विजयनगर साम्राज्य और उत्तर में राजपूत शासकों के साथ मुगल सम्राट व ब्रिटिश शासक तक शामिल थे। कुंभ से कई अप्रिय घटनाएं भी जुड़ी हुई हैं। तैमूर लंग ने 1398 के हरिद्वार महाकुंभ में हजारों श्रद्धालुओं का नरसंहार किया। शैव और वैष्णव संप्रदायों के बीच हुए संघर्ष ने भी 1690 में नासिक कुंभ में 60000 और 1760 के हरिद्वार कुंभ में 1800 जानें ले लीं। कुंभ अपने नाम के साथ कई दुर्घटनाएं भी छोड़ गया। 1820 के हरिद्वार कुंभ की भगदड़ से 430 लोग मारे गए। 1954 के प्रयागराज कुंभ की भगदड़ में भी मरने वालों का आंकड़ा कई सौ पार कर गया।

तीर्थराज प्रयागराज

प्रयागराज में आयोजित कुंभ पर्व सभी कुंभों सबसे प्राचीन ही नहीं, सबसे महिमावान भी है। इसीलिए वह महाकुंभ भी - जिसका आयोजन प्रत्येक 144 वर्ष बाद, यानी 12 पूर्ण कुंभ मेलों के बाद होता है - केवल यहीं आयोजित किया जाता है। इसे पवित्रतम बनाया है तीनों नदियों के संगम ने, जहां डुबकी लगाना मोक्ष प्राप्ति का आरक्षण मान लिया गया है। संगम ही एकमात्र ऐसा स्थान है, जहां गंगा और यमुना को आप उसके रंग और ताप से पहचान सकते हैं। वर्षा के दिनों में गंगा का पानी मटमैला हो जाता है, जबकि यमुना का हरा जल लाल। वहीं शीतकाल में में गंगा का पानी बहुत शीतल होता है, जबकि यमुना तुलनात्मक रूप से ऊष्म। सरस्वती की धारा इस विचार से अदृश्य मान ली गई है कि यह भूगर्भ में बहती होगी। संगम पर गीली मिट्टी के तट दूर-दूर तक फैले हुए हैं। नदी के बीचों - बीच एक छोटे से प्लेटफार्म पर खड़े होकर पुजारी विधि - विधान से पूजा-अर्चना कराते हैं। आप यहां के लिए किराये की नाव किले के पास से ले सकते हैं।

प्रयाग (बहु-यज्ञ स्थल) को कहा जाता है। प्राचीन काल से ही 'तीर्थराज' के रूप में प्रसिद्ध हुआ यह संगम स्थल पर हुए अनेक यज्ञों की वजह से, जिनमें पहला यज्ञ किया सृष्टिकर्ता प्रजापति ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना के तत्काल बाद। यज्ञवेदी है गंगा, यमुना और गुप्त रूप से बहने वाली सरस्वती की धारा, जो इस क्षेत्र को तीन भागों में विभाजित करती है। 'पद्म पुराण' में इसकी तुलना साक्षात सूर्य से करते हुए कहा गया है कि जहां सरस्वती, यमुना और गंगा का संगम होता है, वहां स्नान करने वाले ब्रह्मपद को प्राप्त करते हैं। यह यज्ञ की महिमा ही है, जिसके कारण मान लिया गया है, कि जो प्रयाग की धरती पर पैर भी धर लेता है, उसे हर कदम पर अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। प्रयाग में लगभग 70000 तीर्थ उपस्थित हैं। पद्म पुराण के अनुसार अपने घर में मृत्युशय्या पर पड़ा व्यक्ति भी, यदि दूर भी रहते प्रयाग का नाम स्मरण कर ले तो ब्रह्मलोक का भागी होता है। 'मत्स्य पुराण' में कहा गया है कि युग चक्र पूर्ण होने पर जब रुद्र (शिव) पृथ्वी का विनाश करते हैं, प्रयाग तब भी नष्ट नहीं होता है, क्योंकि विष्णु वेणीमाधव, शिव अक्षय वटवृक्ष के रूप में और स्वयं ब्रह्मा छत्र में उपस्थित रहते हैं। शूलपाणि स्वयं वट की रक्षा करते हैं और यहां मृत्यु प्राप्त करने वाले को सीधे शिवलोक की प्राप्ति होती है। पुराणों के अनुसार यदि कोई व्यक्ति संगम की मिट्टी का भी अपने शरीर पर स्पर्श करा लेता है, तो समस्त पापों से मुक्त हो जाता है और गंगा स्नान के बाद स्वर्ग के पुण्य का भागीदार बन जाता है। यहां यदि किसी को मृत्यु प्राप्त होती है, तो वह जन्म और मृत्यु के सांसारिक चक्र के बंधनों से मुक्त हो जाता है।

आध्यात्मिक लोकतंत्र

कुंभ मेला विश्व का विशालतम धार्मिक सम्मेलन ही नहीं, आध्यात्मिक लोकतंत्र का जीवंत स्वरूप है। विविधताओं की एकरूपता का प्रतिनिधि। सनातन परंपरा में सभी संस्कृतियों को एकाकार कर देने वाला धार्मिक एकता, समरसता और सांस्कृतिक चेतना का वह विश्व मंच, जब भारत ही नहीं, निखिल विश्व अमर हो जाने की अभिलाषा में अमृत की तलाश में प्रयागराज में आ जुटता है। यह सभी प्रकार के दुःख और शोकों की आत्यंतिक निवृत्ति कर देने वाला विराट अनुष्ठान है। यह मात्र स्नान, पूजन, प्रवचन, वार्तालाप, कीर्तन और महाप्रसाद नहीं, इसमें समाहित हैं दान, धर्म और निष्ठा-आस्था की संस्कृतियां। आध्यात्मिक दृष्टि से कुंभकाल में ग्रहों की स्थिति एकाग्रता, आत्मबोध तथा ध्यान साधना के लिए उत्कृष्ट होती है। मकर संक्रान्ति के योग के बारे में तो ऐसा विश्वास है कि यह पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार खोल देता है।

त्रिवेणी तट पर 'गंगे च यमुने चैव ...' मंत्र ने कुंभ के रूप में मानव समाज को सहस्त्रों वर्षों से एकबद्ध रखा है। कुंभ मेला ही नहीं, सर्वोपरि महापर्व है। आध्यात्मिक पर्व। शांति और विश्रांति का दुर्लभतम अमृत बांटकर मर्त्य को अमर्त्य बनाने का उत्सव। अमृत रूपी इस अमरत्व के लिए किसी वर्ग, वर्ण या योग्यता की आवश्यकता नहीं। इस अमृत पर सबका अधिकार है। कुंभ जाति, वर्ग या व्यक्ति सापेक्ष नहीं, बल्कि सार्वभौम है। इसीलिए कोई किसी श्रद्धालु को कुंभ के आनंद से दूर नहीं कर सकता।

सभी को किफायती और पर्यावरण-अनुकूल घर

महायुति की नई महत्वाकांक्षा योजना लाने की तैयारी | मिल मजदूरों के लिए 1 लाख मकानों की घोषणा

राकेश निर्मोही

मुंबई. विधानसभा चुनाव 2024 से पहले महत्वाकांक्षी 'लाडली बहन' योजना लाकर विपक्ष को चारों खाने चित करने वाली भाजपा, शिवसेना (शिंदे गुट) और राकां (अजीत पवार) के गठबंधन वाली महायुति सरकार अब अपने दूसरे कार्यकाल में एक और महत्वाकांक्षी योजना को अमली जामा पहनाने की तैयारियों में जुट गई है. मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्ववाली राज्य सरकार 'सभी के लिए आवास' की नई महत्वाकांक्षी आवास नीति के तहत किफायती, टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल आवास उपलब्ध कराने की प्रतिबद्धता व्यक्त की है. मुंबई के मिल मजदूर इसके पहले लाभार्थी बनने जा रहे हैं. सरकार पहले चरण में एक लाख मिल मजदूरों को उनका अधिकृत घर उपलब्ध कराने की योजना पर काम कर रही है. शुक्रवार को सहयाद्री गेस्ट अतिथि गृह में आयोजित गृहनिर्माण विभाग की बैठक में उप मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने इस बारे में बड़ा खुलासा किया.

नवंबर 2024 में हुए चुनाव में ऐतिहासिक जीत हासिल करने वाली महायुति की नई सरकार ने नए वर्ष की शुरुआत के साथ नए जोश के साथ काम करना शुरू कर दिया है. सह्याद्री अतिथि गृह में गृह निर्माण विभाग के

अधिकारियों के साथ करीब तीन घंटे चली बैठक में डीसीएम शिंदे ने विभिन्न योजनाओं और परियोजनाओं की विस्तार से समीक्षा की. इस मौके पर शिंदे ने मुंबई में रुकी हुई पुनर्विकास परियोजनाओं में तेजी लाने का निर्देश दिया. उन्होंने कहा कि राज्य की 'सभी के लिए आवास' की नई महत्वाकांक्षी आवास नीति को अमल में लाने के लिए किफायती, टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल आवास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए. इस संबंध में एक विस्तृत नीति एक महीने के भीतर तैयार की जानी चाहिए ताकि नागरिकों को म्हाडा और आवास विभाग की योजनाओं से आसानी से लाभ मिल सके. उसके लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल किया जाना चाहिए. उन्होंने कहा कि सरकार मुंबई के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले मिल श्रमिकों घरों की समस्या का समाधान करने जा रही है. उन्होंने कहा कि मिल श्रमिकों के लिए एक लाख मकान बनाए जाएगे और टेंडर प्रक्रिया पूरी हो गई है. जो मिल मजदूर अपने पैतृक गांव चले गए हैं, उन्हें वहीं मकान उपलब्ध कराए जाने से संबंधित संभावनाओं की भी जांच की जानी चाहिए.

लंबे अर्से से संघर्ष कर रहे हैं श्रमिक

वर्ष 1982 की हड़ताल के बाद बृहन्मुंबई की 58 बंद और बीमार कपड़ा मिलों के 1 लाख 74 हजार श्रमिकों ने मकान के लिए आवेदन किया है, इनमें से 1 लाख 18 हजार आवेदन श्रम विभाग ने स्वीकार किये हैं. जबकि सरकार 15 हजार 870 श्रमिकों को मकान आवंटित कर चुकी है. एकनाथ शिंदे के नेतृत्व

वाली पूर्ववर्ती महायुति सरकार के दौरान आवास मंत्री रहे अतुल सावे ने विधानसभा चुनाव 2024 से पहले (अक्टूबर 2024) में कहा था कि हमने मुंबई महानगरीय क्षेत्र में दो अलग-अलग कंपनियों को मिल श्रमिकों के लिए घर बनाने के लिए नियुक्त किया है. इस योजना के तहत 300 वर्ग फुट का रहने योग्य घर, सामुदायिक हॉल, बगीचा, बच्चों के लिए खेल का मैदान, वरिष्ठ नागरिकों के लिए छोटा पार्क उपलब्ध कराया जाएगा. मिल श्रमिकों के मकानों के लिए 5 लाख, 50 हजार रुपए सरकार देगी जबकि शेष 9 लाख 50 हजार रुपए पात्र लाभार्थी (मिल श्रमिक) या उनके उत्तराधिकारियों को देना होगा. यह घर 15 लाख रुपए में मिलेगा और इसमें 3 साल लग सकते हैं.

नवंबर 2024 में हुए चुनाव में ऐतिहासिक जीत हासिल करने वाली महायुति की नई सरकार ने नए वर्ष की शुरुआत के साथ नए जोश के साथ काम करना शुरू कर दिया है. सह्याद्री अतिथि गृह में गृह निर्माण विभाग के अधिकारियों के साथ करीब तीन घंटे चली बैठक में डीसीएम शिंदे ने विभिन्न योजनाओं और परियोजनाओं की विस्तार से समीक्षा की. इस मौके पर शिंदे ने मुंबई में रुकी हुई पुनर्विकास परियोजनाओं में तेजी लाने का निर्देश दिया. उन्होंने कहा कि राज्य की 'सभी के लिए आवास' की नई महत्वाकांक्षी आवास नीति को अमल में लाने के लिए किफायती, टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल आवास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए.

मुंबई के लिए 'क्लस्टर योजना'

उपमुख्यमंत्री शिंदे ने कहा कि मुंबई में झुग्गी-झोपड़ी पुनर्वास और अन्य रुकी हुई पुनर्वास परियोजनाओं को फिर से शुरू करने पर जोर दिया जा रहा है. इसके लिए स्लम पुनर्वास योजना को बढ़ावा दिया जा रहा है. इन परियोजनाओं को पूरा कर मुंबई को स्लम मुक्त बनाने का लक्ष्य रखा गया है. उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि मुंबई के विकास के लिए जल्द ही एक क्लस्टर योजना शुरू की जाएगी और इस योजना के माध्यम से मुंबई में लाखों घर उपलब्ध होंगे. एमएमआरडीए और स्लम पुनर्वास प्राधिकरण के माध्यम से माता रमाबाई आंबेडकर नगर और कामराज नगर झुग्गियों का पुनर्विकास किया जा रहा है. इस मौके पर उन्होंने बीडीडी चाल पुनर्विकास परियोजना, पत्रा चाल पुनर्विकास परियोजना, मोतीलाल नगर 1, 2 और 3 कॉलोनी पुनर्विकास, म्हाडा के माध्यम से कमाठीपुरा क्षेत्र, पुलिस के लिए आवास, मिल श्रमिकों के लिए घरकुल योजना, जीटीबी नगर में पुनर्वास परियोजना, प्रधानमंत्री आवास योजना आदि की समीक्षा की.

वरिष्ठ नागरिकों के लिए आवास नीति

उपमुख्यमंत्री शिंदे ने कहा कि सरकार वरिष्ठ नागरिकों के लिए आवास नीति लागू करने जा रही है और ऐसा करने वाला महाराष्ट्र देश का पहला राज्य होगा. इस नीति के अनुसार, छात्रों के लिए छात्रावास, कामकाजी महिलाओं के लिए छात्रावास, श्रमिकों के लिए घर, पट्टे पर घर, पुनर्विकास, पर्यावरण के अनुकूल घर, नवीन प्रौद्योगिकी के माध्यम से घर बनाए जाएंगे. प्रदेश में विभिन्न आवासीय संस्थाओं के माध्यम से अनेक आवासीय परियोजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं.

ये अधिकारी रहे मौजूद

बैठक में आवास विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव वल्सा नायर सिंह, धारावी पुनर्विकास परियोजना के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एस.वी.आर. श्रीनिवास, शहरी विकास विभाग के प्रमुख सचिव असीम गुप्ता, म्हाडा के उपाध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी संजीव जायसवाल, मुंबई स्लम पुनर्वास प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. महेंद्र कल्याणकर, मुंबई हाउसिंग एंड एरिया डेवलपमेंट बोर्ड के मुख्य अधिकारी मिलिंद बोरिकर, मुंबई बिल्डिंग मरम्मत और पुनर्निर्माण बोर्ड के प्रमुख अधिकारी मिलिंद शंभरकर एवं विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे. इस दौरान आवास विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव वल्सा नायर सिंह ने प्रेजेंटेशन के माध्यम से विभाग के बारे में जानकारी दी.

गांव बदरंग हो रहा है

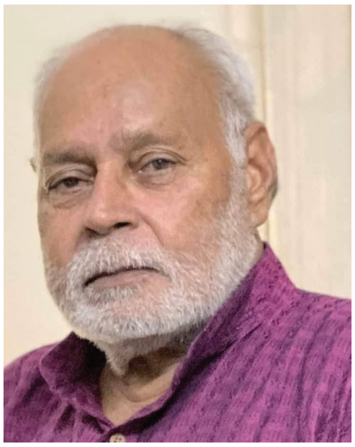

चंचल

हमारी दिक़्क़त है , हम देश में हैं , देश से कोसों दूर हैं । शहर देश नहीं है , ये देश के मुहाँसे हैं , ये मुहाँसे जोंक की तरह देश का खून चूसते रहते हैं , पर देश की नासमझी देखिये , यह अपने शोषक से ही ख़ौफ़ज़दा रहता है और पूरी कोशिश कराता है कि , वह भी शहर हो जाय शहरी शोषण में भागीदारी करे ।

चलिये फ़लसफ़े से हटिये , इस विषय पर बहुत कुछ कहा गया है , लिखा गया है , सहज उपलब्ध है , देख लीजिये । बस एक सीधी जानकारी रख लीजिये - आजादी के बाद , तकसीम से बचे भारत की मर्दुमशुमारी बताती है - भारत में कुल 575936 गाँव 2500 शहर हैं । तुर्रा यह कि इन ढाई हज़ार शहरों में जौनपुर , आज़मगढ़ , बलिया , छपरा , सासाराम , जैसी बसावट को भी शहर की सूची में रखा है ,

- ये किस बिनाह पर शहर हैं , भाई ?

- यहाँ “ कलेक्टर “ बैठता है , कस्टोडियन है , कप्तान है , कचहरी है । इस लिये इसे शहर कहते हैं

-कलेक्टरमानेअमीनकाबाप,मालबटोरने का सरकारी सूबेदार । सरकारी भाषा में रेवन्यू इकट्ठा कर , अमन चेन की सुविधा दे ।

बहरहाल हम बा

हरद्वार या हरिद्वार

© (सुरेश पंत)

आज किसी ने पूछा था हरद्वार ठीक है या हरिद्वार? अपने उत्तर को एक तुरत-फुरत ब्लॉग के रूप में दे रहा हूँ।

हरद्वार या हरिद्वार ?

पुराणों के अनुसार मोक्षदायिनी सप्तपुरियों में परिगणित ₹अयोध्या मथुरा माया...₹ की मायापुरी ही वर्तमान में हरिद्वार/हरद्वार के नाम से प्रसिद्ध है। हरिद्वार नाम लोकप्रयोग में हरद्वार है। पुराने प्रलेखों, सरकारी दस्तावेजों, कोर्ट-कचहरी के कागज़ात में हरद्वार नाम मिलता है।

हरद्वार/हरिद्वार के अन्य पौराणिक नाम हैं- गंगाद्वार, माया, कपिलस्थान। युवान् च्वांग ने इसे मो-यू-लो (मायापुरी?) कहा है। पुराणों में इसकी विशद चर्चा है और माना गया है कि समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कलश से छलकी एक बूँद यहीं हर की पौड़ी (पैड़ी) में गिरी थी। इसलिए यहाँ भी 12 साल में कुंभ का आयोजन होता है।

हरद्वार/हरिद्वार में शैव और वैष्णव दृष्टि का भी अंतर है। हिमालय हर की ससुराल है, ज्योतिर्लिंग केदारेश्वर सहित पाँच केदार (रुद्र, तुंग, कल्प, मध्यमहेश्वर और केदारेश्वर) इसी प्रखंड में हैं, इसलिए यह ₹हरद्वार₹ है और नर-नारायण स्वरूप बदरीनाथ का प्रवेश मार्ग होने से यह ₹हरिद्वार₹ भी है।

लोकमानस में साधु-संत

लोकगाथा और लोककथाओं के पात्रों का वर्गीकरण करें तो उनमें देव-दानव , राजा , वीर राजकुमार के साथ ही एक चरित्र साधु-सन्त का भी होता है ! अलग-अलग युगों में अलग-अलग रूप हो सकते हैं - कहीं ऋषि और मुनि का रूप है , तो कहीं गोरख जैसा योगी है , कहीं साधु या संन्यासी है , महात्मा है ! रूप जो भी हो , वह लोकजीवन का शिवम् है ! ध्यान देने की बात है कि लोकमानस में ऋषि और मुनि , साधु-सन्त राजा से ऊपर हैं ! वह लोकातीत है किन्तु लोकातीत भी लोक के मंगल के लिए है , अपने लिए नहीं ! लोकातीत वह इसलिए है कि वह राजा के शासन में नहीं है ! वह बार-बार लोकजीवन को आश्वस्त करता है कि राजा से डरो मत , वह सबसे बड़ा नहीं है , उससे भी बड़ा ईश्वर है ! ईश्वर , जिसने सूरज-चाँद बनाये , दिन और रात बनाये ! जीवन की एक व्याख्या राजा का आदमी महन्त -मठाधीश करता है , दूसरी व्याख्या ऋषि - मुनि , साधु-सन्त करता है ! सब के भले में भला ! वह समाज की नैतिक-सत्ता का प्रतीक है ! वह विराट सत्य का निश्छल प्रतिपादन करता है ! निश्छल !लोक की आत्मा वही है ! महात्मा ! उसके लिए कोई अपना या पराया नहीं होता , वह सभी का होता है और सब उसके होते हैं ! यह साधु राजा को शाप दे सकता है ! राजा इससे डरता है ! यह लोक की सत्ता है , लोक के विश्वास की सत्ता है ! एकता की सत्ता है ! सामंजस्य और समन्वय की सत्ता है ! लोकमानस में इस साधु के प्रति विश्वास ही वह कारण है कि लोग साधु का स्वाँग बना लेते हैं ! अन्दर से वे सामान्य आदमी से भी निर्बल चरित्र के होते हैं !

स्व श्री गुलजारी लाल नन्दा जब देश के गृहमन्त्री थे तब उन्होंने साधुसभा बनवायी थी कि यह साधु-शक्ति देश के कुछ काम आ सके , किन्तु वह ढाक के तीन पात ही सिद्ध हुए क्योकि सच्चा साधु भला किसी के बन्धन में क्यों रहेगा और जो किसी के बन्धन में है वह सच्चा कैसे हो सकता है ?

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के हाथों होगा राधाबल्लभ की विशेष पूजा

सात दिवसीय धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित

खारघर में इस्कॉन के नवनिर्मित श्री श्री राधा मदन मोहन मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा समारोह 9 से मुंबई इस्कॉन द्वारा नवी मुंबई के खारघर में नवनिर्मित स्थित श्री श्री राधा मदन मोहन मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह का आयोजन किया जा रहा है। 9 से 15 जनवरी तक चलने वाले उद्घाटन समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शामिल होंगे। वहीं भजन गायक अनूप जलोटा, सांसद एवं अभिनेत्री हेमा मालिनी, गायिका अनुराधा पौडवाल सहित दर्जनों कलाकार अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे।

मंदिर के अध्यक्ष डॉ. सूरदास प्रभु जी ने बताया कि पिछले 14 साल से इस दिव्य और भव्य मंदिर का निर्माण कार्य किया जा रहा था, जो अब पूर्ण हुआ है। ए. सी. श भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद द्वारा

1966 में वैश्विक कृष्ण चेतना का प्रसार करने के लिए अंतरराष्ट्रीय कृष्ण सोसायटी भावनामृत संस्थान की स्थापना की गई थी। तब से श इसका लगातार विकास हुआ और आज दुनिया भर में इसके छह सौ से अधिक केंद्र श्रीमद्भागवत का विभिन्न भाषाओं में न केवल प्रचार कर हैं, बल्कि लोगों को सनातन संस्कृति

9 एकड़ में फैला है मंदिर परिसरः सूरदास प्रभु ने बताया कि इस्कॉन खारघर ने लगभग 9 एकड़ भूमि पर एक उत्कृष्ट राधा कृष्ण मंदिर का निर्माण किया है। इसे श्री श्री राधा मदन मोहन जी मंदिर, महाराष्ट्र की महिमा- वैदिक शैक्षिक और सांस्कृतिक केंद्र कहा जाएगा। इसके निर्माण में दानदाताओं के सहयोग से लगभग 160 करोड़ का खर्च आ रहा है। इस मंदिर में कई सुविधाएं होंगी, जिससे नवी मुंबई के नागरिकों को फायदा होगा। मंदिर कई आध्यात्मिक और सामाजिक परियोजनाएं चलाता है। हम महाराष्ट्र के सभी नागरिकों, विशेष रूप से नवी मुंबई में रहने वाले लोगों के लिए एक आध्यात्मिक केंद्र का निर्माण कर रहे हैं, जहां संस्कार निर्माण पर ध्यान केंद्रित होगा।

राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतीक भगवान् श्रीराम

(श्रीवीर विनायक दामोदरजी सावरकर)

भगवान् श्रीराम हिन्दू-स्वाभिमानके सबसे बड़े प्रतीक हैं। इसीलिये मैंने इंग्लैंडमें आयोजित श्रीराम-जन्मोत्सव- समारोहमें कहा था- 'अगर मैं इस देशका अंग्रेज डिक्टेटर होता तो सबसे पहला काम यह करता कि महर्षि वाल्मीकिद्वारा लिखित 'रामायण' को जब्त करनेका आदेश जारी करता ।'

क्यों ? इसलिये कि जबतक यह महान् क्रान्तिकारी ग्रन्थ भारतवासी हिन्दुओंके हाथोंमें रहेगा, तबतक हिन्दू न तो किसी दूसरे ईश्वर या सम्राट्के आगे सिर झुका सकते हैं और न उनकी नस्लका ही अन्त हो सकता है।

'आखिर रामायणके अंदर ऐसा क्या है कि वह गङ्गाकी तरह भारतवासियोंके अन्तःकरणमें आजतक बहती ही चली आ रही है ? मेरी सम्मतिमें रामायण लोकतन्त्रका आदि शास्त्र है-ऐसा शास्त्र जो लोकतन्त्रकी कहानी ही नहीं सुनाता, लोकतन्त्रका प्रहरी, प्रेरक और निर्माता भी है। इसलिये तो मैं कहता हूँ कि अगर मैं इस देशका डिक्टेटर (तानाशाह) होता तो सबसे पहले रामायणपर प्रतिबन्ध लगाता, जबतक रामायण यहाँ है, तबतक इस देशमें कोई भी डिक्टेटर पनप नहीं सकता।

स्वाधीनताकी भावनाको कोई भी नहीं कुचल सकता ।'

रामायणकी शक्तिकी कौन कहे, क्या कहीं नजर आता है ऐसा सम्राट्, साम्राज्य, अवतार या पैगम्बर जो भगवान् श्रीरामकी तुलनामें ठहर सके ? सबके खण्ड हर आर्तनाद कर रहे हैं, किंतु रामायण का राजा, उसकी मर्यादा, उसका धर्म, उसके द्वारा स्थापित रामराज्य भारतवासियों के मानसको आज भी ज्यों-का-त्यों प्रेरित-प्रभावित कर रहा है।

'चक्रवर्ती राज्यको त्यागकर वल्कल वेश में भी प्रसन्न- वदन रहनेवाले, राजपुत्र, किंतु अयोध्या से रामेश्वरम्म तक लोक- जीवनके बीच एक सामान्य जनकी भांति विचरण करनेवाले शबरी की भक्तिके वशीभूत हो उसके जूठे बेर खानेवाले और अहल्या का उद्धार करनेवाले श्रीरामने रावणकी लंका जीती, किंतु फूलकी तरह उसे अर्पण कर दिया उस विभीषण को जिसने डिक्टेटर तथा धर्मद्रोही भाई (रावण) का विरोध कर प्रजातन्त्र का ध्वज फहराया था।'

ऐसे थे रामायण के श्रीराम, जिनकी जीवन-गाथा रामायण- में अजर-अमर है। इस देशको मिटानेके लिये बड़ी-बड़ी ताकतें आयीं- मुगल, शक, हूण आये; किंतु वे इसे मिटा न सके। कैसे मिटाते ? रामायण जन-जनको प्रेरणा जो दे रही थी, स्वधर्म तथा स्वदेशकी रक्षा की ।

हृदय रोगा की रोकथाम के लिए नजरिया बदलना होगा

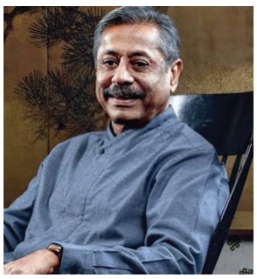

डॉ. नरेश त्रेहान सीएमडी,
मैदांता हास्पिटल

डॉ. नरेश त्रेहान सीएमडी, मैदांता हास्पिटल वायु प्रदूषण एक राष्ट्रीय स्वास्थ्य संकट तो है ही, यह एक घातक महामारी भी पैदा कर रहा है- हृदय रोग की। वायु प्रदूषण से दिल को धरि-धीरे नुकसान होता रहता है और फिर यह गंभीर समस्या बन सकती है। हमने हृदय रोग के मामलों में भोजन और व्यायाम से जुड़े जोखिमों से निपटने की दिशा में काफी प्रगति की है, लेकिन यह जंग तब तक नहीं जीत सकते जब तक वायु प्रदूषण पर नियंत्रण नहीं होगा। यह जरूरी है क्योंकि जो लोग स्वस्थ जीवनशैली अपनाते हैं, उन्हें भी वायु प्रदूषण का खतरा बना रहता है। हृदय रोग पहले से ही भारत में मौत का प्रमुख कारण है और वायु प्रदूषण इस समस्या को बढ़ा रहा है। यानी हृदय रोग की रोकथाम व्यापक दृष्टिकोण अपनाना जरूरी है। के लिए हालांकि वायु प्रदूषण पूरे शरीर को प्रभावित करता है, लेकिन हृदय पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। इससे होने वाले नुकसान नसों को सख्त और संकरा बना देते हैं। इससे खून का थक्का जमने, बीपी बढ़ने, दिल का इलेक्ट्रिक सिस्टम बाधित होने, नसों की उम्र समय से में जैसे खतरे पाहले बढ़ने और संचार प्रणाली में सजाने लगता है और दिल का दौर जय बनाये होता है। हमारा शरीर अनियमित धड़कन, थकान, सीने में परेशानी और सांस लेने में कठिनाई के जरिए इसका संकेत देता है। जिन दिनों प्रदूषण ज्यादा होता है। ये प्रभाव इतने गंभीर सकते हैं कि दिल का दौरा पड़ सकता है। अनुमान हो है कि साल में पीएम 2.5 के प्रति 10 mcg/m के संपर्क से दिल का दौरा पड़ने का खतरा 15-30% और मृत्यु दर 20% बढ़ जाती है। या प्रदूषण सालाना १० लाख से ज्यादा लोगों की जवाद प्रषण मान से लगभग 70% मीदें परिवेशीय वायु गुणवत्ता के कारण होने वाली हयप संबंधी बीमारियों से होती हैं। भारत में वायु प्रदूषण स्तर, हमारे सुगर वार्षिक एवियंट स्टैंडर्ड, पीएम 2.5 के 40 mcg/m3 से ज्यादा है। अध्ययनों से पता चलता है कि हमारी लगभग एक तिहाई आबादी, इस स्टैंडों से कम गुणवत्ता की हवा वाले इलाकों में रहती है। हैं। हमारे लिए ये एक गंभीर और अनूठी चुनौती ये आंकड़े भारत- जो दुनिया की हृदय रोग राजधानी है और जहां दिल का पहला दौरा पड़ने की औसत आयु सिर्फ 50 वर्ष है- में वायु प्रदूषण, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, हैमवन जैसी एक साथ होने वाली है। इस संकट से सिर्फ बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं और पहले से बीमार लोगों को ही खतरा नहीं है, बल्कि यह बच्चों के मानसिक विकास पर असर डालकर भारत के भविष्य के लिए भी खतरा बन सकता है।

हवा को सुरक्षित बनाने के लिए बेहतर कानून, नीतियां, तकनीक और कार्यान्वियन के साथ नैदानिक तैयारी जरूरी है। जैसे-जैसे राष्ट्रीय नीतिया दीर्घकालिक वायु गुणवत्ता सुधार की दिशा में प्रगति कर रही हैं, हमारे चिकित्सीय ज्ञान और हेल्थकेयर क्षमताओं को भी आगे बढ़ना होगा। उच्च प्रदूषण वाले दिनों के लिए तो वैज्ञानिक सुझाव मौजूद हैं, लेकिन हमें स्वस्थ और कमजोर आबादी, दोनों की मदद के लिए साल भर के दिशानिर्देशों की जरूरत है। नियमित व्यायाम हृदय की मांसपेशियों और रक्त वाहिकाओं को मजबूत बनाता है, जिससे उनकी प्रदूषण के नुकसान को झेलने की क्षमता बढ़ती है। एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर आहार, प्रदूषण से होने वाले ऑक्सीडेटिव तनाव को बेअसर करने में मदद करता है, जबकि अच्छी नींद व तनाव से जलन-सूजन कम होती है। खूब पानी पीने से टॉक्सि हृदय रोग की पहचान की पारंपरिक जांचों में हवा की गुणवत्ता के आंकड़े शामिल किए जा सकते हैं। स्थानीय वायु गुणवत्ता मॉनिटर और पहने जा सकने वाले डिवाइसों से प्रदूषित हवा में रहने से जुड़ा रियल टाइम डेटा मिल सकता है।

साफ करने में मदद मिलती है और स्वस्थ वजन बनाए रखने से हृदय संबंधी तनाव कम हो जाता है। हालांकि ये आदतें हमें दूषित हवा में सांस लेने के खतरों से पूरी तरह सुरक्षित नहीं बनाएंगी। उच्च प्रदूषण वाले दिनों में सोच-समझकर बाहरी गतिविधियों की योजना बनाएं। घर से तभी निकलें जब जरूरी हो। फेस मास्क पहनने चाहिए, पर जिन्हें हृदय संबंधी रोग हैं उन्हें पहले डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिए। स्वास्थ्य प्रणाली को भी अपग्रेड होना होगा। हृदय रोग की पहचान की जांचों में हवा की गुणवत्ता के आंकड़े शामिल किए जा सकते हैं। स्थानीय वायु गुणवत्ता मॉनिटर और पहने जा सकने वाले डिवाइसों से प्रदूषित हवा में रहने से जुड़ा रियल-टाइम डेटा मिल सकता है और प्रदूषण से जुड़े जरूरी मापदंडों को ट्रैक किया जा सकता है। इसे बायोकेमिकल मार्कर या इंफ्लेमेशन और दिल के समग्र स्वास्थ्य मापदंडों के साथ देखने देखने पर, डॉक्टर किसी व्यक्ति में वायु प्रदूषण के प्रति संवेदनशीलता को समझ सकते हैं।

नशेड़ी लड़का : लघुकथा

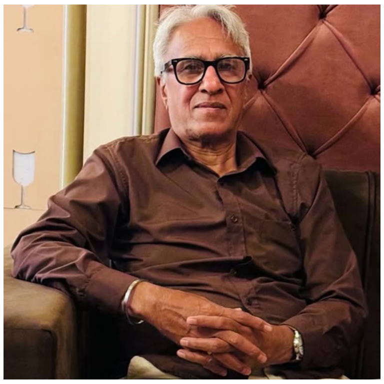

तेजबीर सिंह सधर
वरिष्ठ कथाकार

'लड़का घोड़ी से नीचे गिर गया !' बारात में एक शोर सा उठा और सभी लोग एक दूसरे के कानों के पास मुँह ले जाकर फुसफुसाने लगे.

"कहता न था कि लड़का नसेड़ी है," रामधुन ने हरिप्रसाद को कुहनी मारी और मुस्कुराते हुए पान चबाने लगे. लड़का हरिप्रासाद जी का भतीजा था इसलिए उनको चिंता हो आई कि बात ज्यादा न फैले. उन्होनें बचाव में कहा, "नहीं भाई, घोड़ी पर बैठ कर संतुलन बिगड़ गया होगा. लड़का तो नशे पत्ते से बहुत दूर रहता है. हास्टल में रह कर पढ़ा है. अच्छे नम्बर लेकर अभी मास्टर डिग्री हासिल की है."

हरिप्रसाद जी बैंड बाजे वालों को धकेलते हुए पीछे को भागे और लड़के सत्यवीर को सहारा देकर फिर से घोड़ी पर बैठाया. लेकिन हरिप्रसाद जी को लगा जैसे लड़का सचमुच नशे में था. उनका दिल तेजी से धड़कने लगा क्योंकि उन्होनें ही शादी तय करवाई थी. बारात दरवाजे तक पहुँचाने तक वह दो गिलास नीम्बू पानी का जुगाड़ भी कर लाये थे सत्यवीर के लिए.

इस दौरान सत्यवीर के पिता थोड़ा पीछे रह गए थे क्योंकि उनकी धोती ढीली थी और वे उसे सही करने के लिए पीछे हो गए थे. जब बारात दरवाजे पर पहुंची तो वो भी स्वागत वाली लाइन में आगे आकर खड़े हो गए. द्वार चार हो ही रहा था कि सत्यवीर की आँखें बंद होने लगीं और वह वहीँ ढेर हो गया.

'लड़का नशेड़ी है.' इस बार के शोर में कोई बहाना न चल सका. बारात वापस लौटा दी गई. 'पता लगाओ किसने पिलाई.' लड़के के दोस्त बगलें झाँक रहे थे.

एक कोलंबस
तुझ्यात
एक कोलंबस
माझ्यात
एक कोलंबस,
आम्हा सगळ्यांत
नव्या नद्या
नवी क्षितिजं
नवे समुद्र
नव्या डोंगरदऱ्या
... धुंडाळता कोलंबस
नवा समाज
नवा मेंदू
नवा विचार
नवी व्यवस्था
... बनवता कोलंबस
नवे शब्द
नवं काव्य
नवे अर्थ
नवे प्रश्न
... घडवता कोलंबस
नवा वसा
नवा आरसा
नवं प्रतिबिंब
नवी घडण
.... जगता कोलंबस
नवी उत्तरं
नवं वास्तव
नवं रान
नवं तंत्र
.... शोधता कोलंबस
होय,
आम्ही सारे कोलंबस

नवी धरती
नवं आकाश
नवा सूर्य
नवा चंद्र
.... घडवते कोलंबस
- सुदेश इंगळे

ईश्वर

ईश्वर नहीं है
यह कहना हिमाकत है।

तुम्हारा ईश्वर मेरा भी है
ईश्वर सुविधा नहीं।

मेरा ही ईश्वर तुम्हारा है
बेवकूफी भरी जिद है ।

तुम्हारा ईश्वर मेरा नहीं
मेरा ईश्वर मेरा है
वह है
कभी समय
कभी सौदर्य
कभी यह
कभी वह
है मगर निरंतर
और है गतिमान ,
वह इनर्जी है विज्ञान की
साधना किसी भक्त की
पदार्थ किसी भोगी का
लहर किसी द्रष्टा की
दृष्य मे छिपा निराकार
तो एहसास किसी आकार
में
सुक्ष्माति सूक्ष्म चेतन है
क्वान्टम है चेतन
वह एक खोज है निरत
जिसे नाप सकते हैं
सिर्फ एहसास के फीते से।

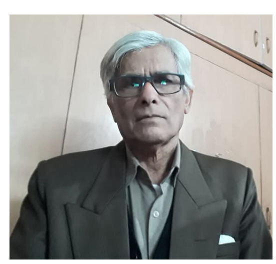

डीएन भटकोटी

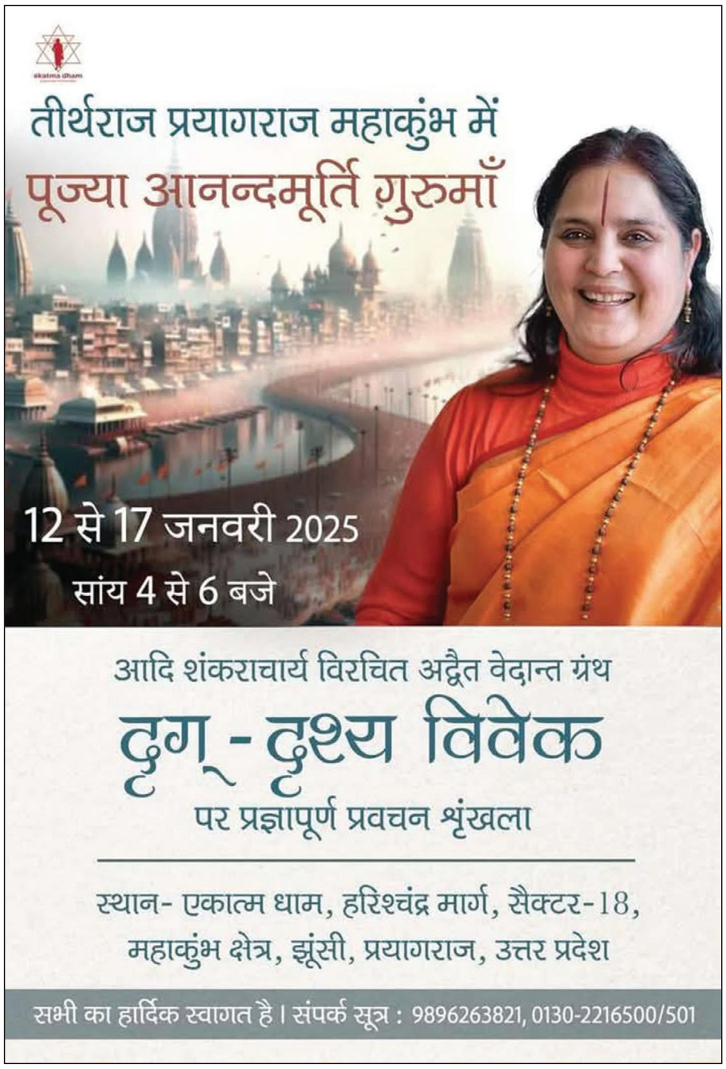
तीर्थराज प्रयागराज महाकुंभ में
पूज्या आनन्दमूर्ति गुरुमाँ
12 से 17 जनवरी 2025
सांय 4 से 6 बजे
आदि शंकराचार्य विरचित अद्वैत वेदान्त ग्रंथ
दृग् - दृश्य विवेक
पर प्रज्ञापूर्ण प्रवचन श्रृंखला
स्थान- एकात्म धाम, हरिश्चंद्र मार्ग, सैक्टर-18,
महाकुंभ क्षेत्र, झूंसी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश
सभी का हार्दिक स्वागत है। संपर्क सूत्र : 9896263821, 0130-2216500/501

॥श्रीमते रामानुजाय नमः॥
॥श्रीमद् वरवरमुनये नमः॥
महाकुंभ मेला
प्रयागराज
महाराज जी द्वारा अनेक धार्मिक प्रकल्पों का संचालन होना सुनिश्चित है।
"श्रीमद्भागवत कथा, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण कथा, श्री विष्णु महायज्ञ, श्री रामनाम अखंड संकीर्तन"
अनवरत अन्नक्षेत्र, संतो एवं श्रद्धालुओं को निःशुल्क भोजन वितरण, तीर्थ यात्रियों को समुचित चिकित्सा सुविधा, कल्पवासियों को खाने पीने रहने की उत्तम व्यवस्था की जाएगी।
कुंभ मेले से संबंधित जानकारी हेतु संपर्क करें:
9616703209, 9415370651
स्थल - आचार्य बाड़ा सेक्टर 18, शंकराचार्य मार्ग सूरदास चौराहा, प्रयागराज
जगद्गुरु स्वामी श्री राघवाचार्य जी महाराज
(अध्यक्ष श्रीरामलला सदन देवस्थान रामकोट अयोध्या)

कुम्भ महापर्व
1008.Guru
4- शिविर पता - भारतीयम्, ILE14 इण्टरलाकिंग मार्ग, छतनाग रोड,
पूर्वी पटरी , पानी टंकी के पास, महाकुंभ, प्रयागराज

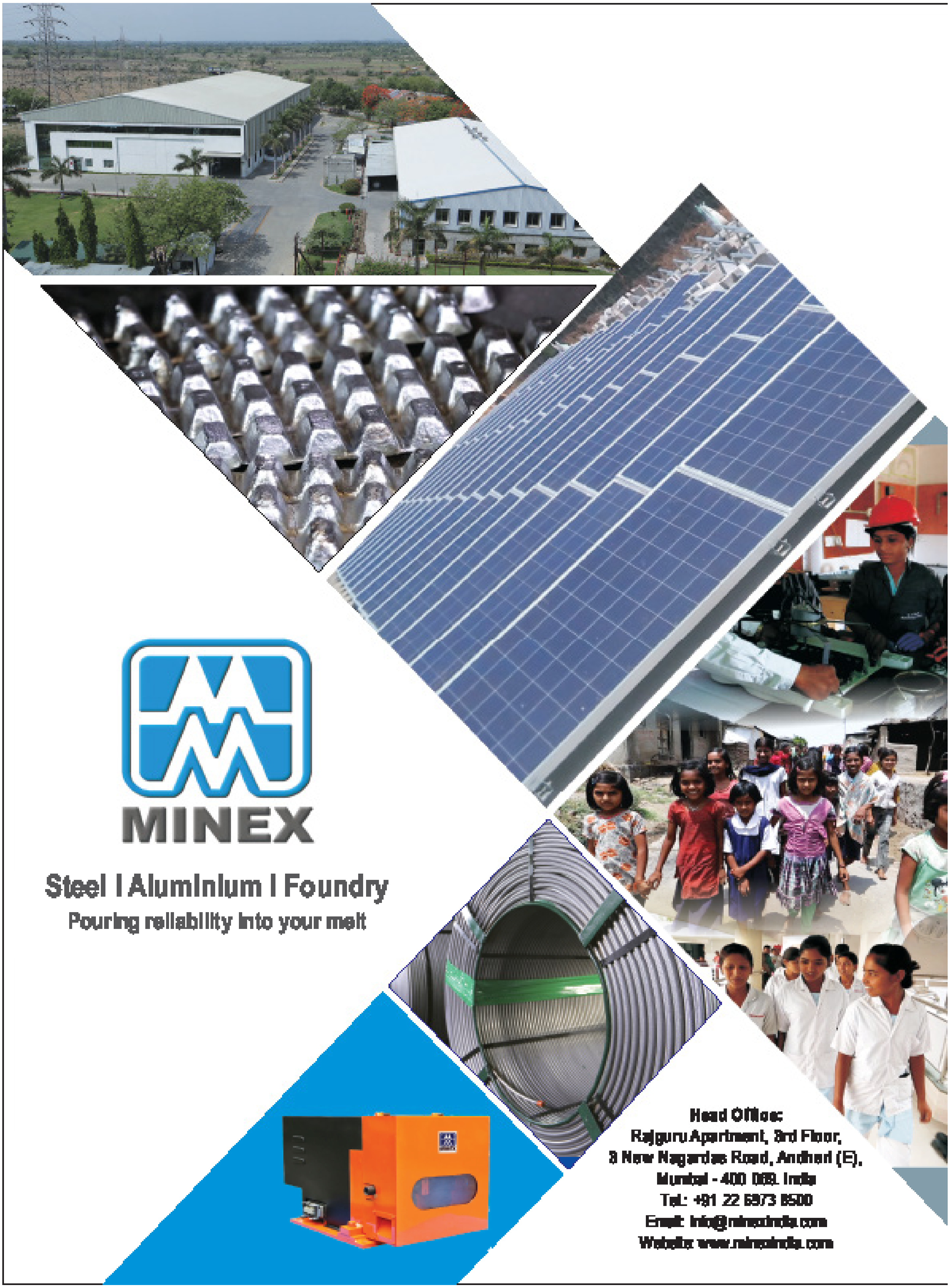

MINEX
Steel I Aluminium I Foundry
Pouring reliability into your melt
Head Office:
Rajguru Apartment, 3rd Floor,
3 New Nagardas Road, Andheri (E),
Mumbai - 400 069. India
Tel: +91 22 6973 6500
Email: info@minexindia.com
Website: www.minexindia.com